भाषा-प्रवाह

भाग-4

चतुर्थ कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

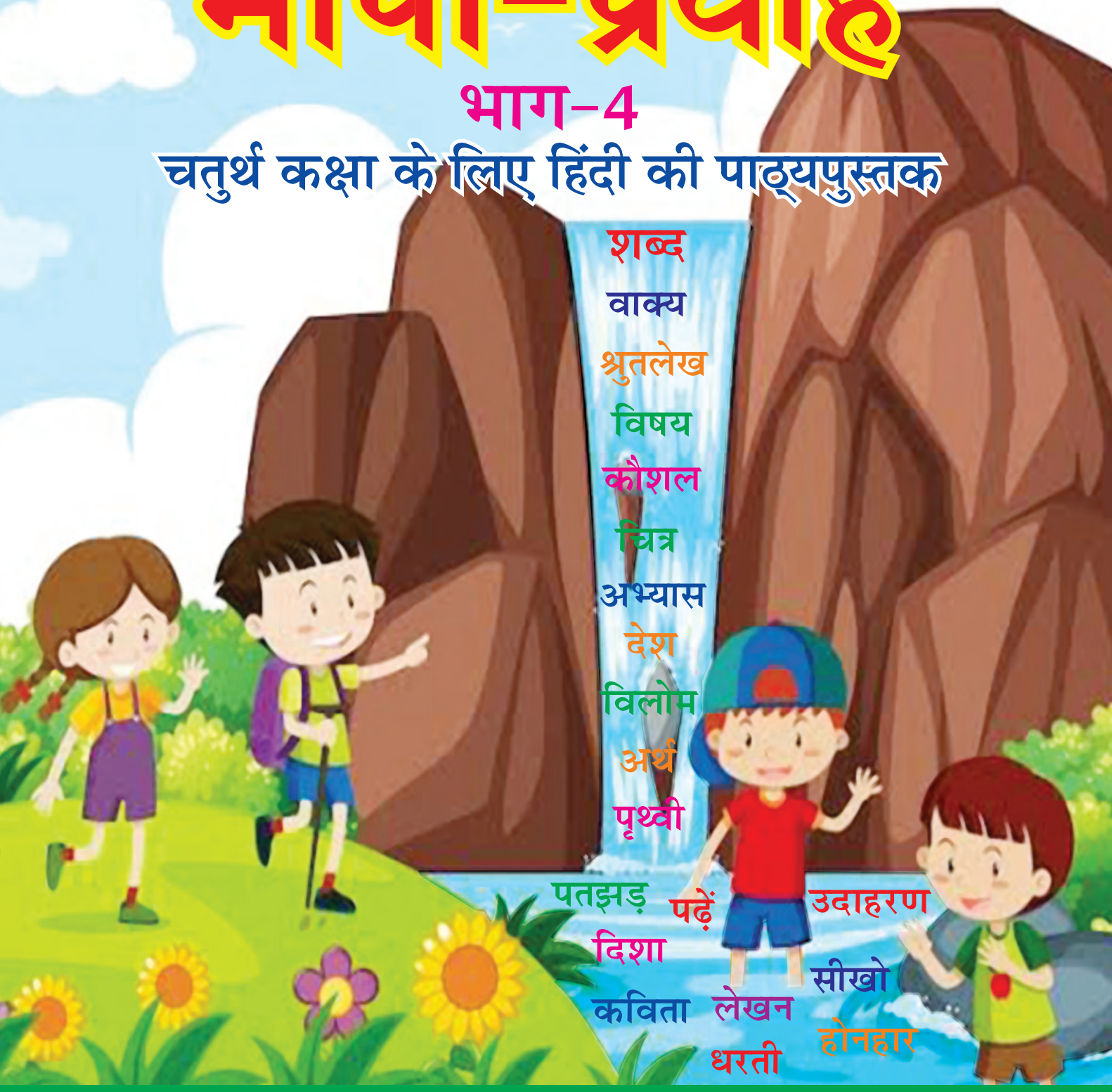

Jammu & Kashmir Board Of School Education

जम्मू - कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

Dear Teachers & Students, Instructions to view content inside QR codes

In this textbook, you will see many printed QR codes, such as

Use your mobile phone, tablet or computer to see interesting lessons, videos, documents, etc. linked to the QR code.

Use Android mobile phone or tablet to see content linked to QR code:

Step	Description
1.	Go to https://diksha.gov.in/ap/get to get the DIKSHA app from the Play Store
2.	Click Install
3.	After successful download and installation, Click Open
4.	Choose your preffered Language - Click English
5.	Click Continue
6.	Click Browse as Guest
7.	Select Student and Click on Continue
8.	On the top right, click on the QR code sanner icon and scan a QR code printed in your book **OR** Click on the search icon and type the code printed below the QR code, in the search bar
9.	A list of linked topics is displayed
10.	Click on any link to view the desired content

Use Computer to see content linked to QR code:

1.	Go to https://diksha.gov.in/ap/get
2.	Enter the code printed below the QR code in the browser search bar
3.	A list of linked topice is displayed
4.	Click on any link to view the desired content

भाषा-प्रवाह

भाग-४

चतुर्थ कक्षा के लिए हिन्दी की पाठ्यपुस्तक

जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

प्रथम संस्करण : मार्च, 2024 - 11.2T

© जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित

सैक्रेटरी, जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ 71.00

मुद्रक : अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्रा. लि., डब्लू–30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–2, नई दिल्ली–110 020

आमुख

हमारे देश में बच्चों के सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। इसमें परिवार, रिश्तेदार, समुदाय, समाज एवं सीखने के औपचारिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों के जीवन के आरंभिक वर्षों में संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार और संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० (N.E.P. 2020) ने 5+3+3+4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है, जो आरंभिक शिक्षा पर समुचित ध्यान देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है जो न केवल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक **'भाषा-प्रवाह' भाग-४** की संरचना राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के अनुरूप की गई है। इसमें बच्चों के सतत् एवं समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए ऐसी पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है जिसमें अनुभव से सीखना, सांस्कृतिक समावेश, भारतीयता एवं भारतीय ज्ञान परंपरा, पंचकोशीय विकास, मूल्यशिक्षा, वैश्विक चिंतन, एवं स्थानीय संदर्भों का समावेश किया गया है। इस पाठ्य पुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददायी बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक माध्यम है, बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने का, जिनके बीज उनमें पहले से ही विद्यमान हैं। अत: शिक्षक वर्ग से आग्रह है कि वे पाठ्य पुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा-कक्ष के इर्द-गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ। उन्हें स्वयं खोज-बीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें अपनी बात कहने का अवसर दें। सही-गलत का निर्णय न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो संप्रेषण के साथ-साथ सोचने समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि जितना अधिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए होता है, उतनी ही तेजी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अत: इस पुस्तक में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने,कहानी और कविताओं का आनंद लेने, नए शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर अलग-अलग संदर्भों में दिए गए हैं।

जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड का मुख्य उद्देश्य परीक्षाओं का आयोजन करने के साथ-साथ शिक्षा में गुणवत्ता लाना भी है। बोर्ड **'भाषा-प्रवाह' भाग-४** की पाठ्यसामग्री विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करता है। मैं समिति के सभी सदस्यों को उत्कृष्ट रूप से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में बोर्ड के अकादमिक विभाग का सहयोग अविस्मरणीय है। अत: उनके प्रति मैं अपार कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

'भाषा-प्रवाह' भाग-४ नन्हें-मुन्ने नौनिहालों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड अपने प्रकाशनों को सतत् स्तरीय एवं परिष्कृत करने के लिए सदा प्रतिबद्ध है। पुस्तक के अगले संस्करण हेतु आपके महत्वपूर्ण सुझाव एवं टिप्पणियाँ आमंत्रित हैं।

प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास
अध्यक्ष
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

पुस्तक परिचय

प्यारे बच्चों,

भाषा वह उपकरण है, जिसके माध्यम से हम दुनिया के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। कहा जाता है कि धरती पर लाखों वर्ष पहले मानव सभ्यता के आरंभिक काल में मानव के पास भाषा नहीं थी। केवल कुछ संकेतों या ध्वनियों के आधार पर वे लोग एक दूसरे तक अपनी बात अथवा अपने विचार पहुँचाते थे। कालान्तर में भाषाएँ उत्पन्न हुई जोकि भिन्न-भिन्न देशों की सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक बन कर उभरीं। ठीक उसी तरह आज भी कोई शिशु इशारों और ध्वनियों के आधार पर अपनी माता अथवा परिजनों तक अपनी बात पहुँचाता है। बोलना शुरु करने पर वही शिशु अपनी मातृभाषा को धीरे-धीरे सीखता है और शिक्षा के विकास के क्रम में वह अपने देश की अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करता है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में नन्हें, सुकोमल बच्चों के लेखन कार्य को सुधारने के लिए विविध अभ्यासों के समावेश द्वारा रोचकता का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। अक्षरों के साथ-साथ शब्दों एवं शब्दों पर मात्राएँ लगाकर उनसे बने वाक्यों का अभ्यास कराया गया है, जिससे बच्चों में लिखने की जिज्ञासा उत्पन्न होगी। नवीनता को ध्यान में रखकर अभ्यास दिये गये हैं ताकि बच्चे आसानी से समझकर उत्तर दे सकें। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा की अपेक्षित चारों योग्यताओं जैसे- सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के सम्यक् विकास का ध्यान रखा गया है। आशा करते हैं कि इस पुस्तक के अध्ययन से विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

सहयोग

डॉ. अजय कुमार सिंह, प्रभारी निदेशक, तुलनात्मक धर्म एवं सभ्यता अध्ययन केन्द्र, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू।

डॉ. अनुपमा शर्मा, सह प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, साम्बा।

श्री देविन्द्र सिंह, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तलूर, साम्बा।

श्री पंकज कोहली, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चन्दवाँ, कठुआ।

डॉ. वन्दना शर्मा, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मण्डाल, जम्मू।

श्री संदीप कुमार, वरिष्ठ शिक्षक, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चट्ठा गुजराँ, (मड़) जम्मू।

समीक्षा समिति

डॉ. सीमा सूदन, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय खौड़, जम्मू।

डॉ. प्रवीण कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महिला महाविद्यालय परेड, जम्मू।

श्रीमती सीमा कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय अखनूर, जम्मू।

डॉ. सुनील कुमार, व्याख्याता (संविदा), राजकीय महिला महाविद्यालय गांधीनगर, जम्मू।

सदस्य समन्वयक

डॉ यासिर हमीद सिरवाल, उननिदेशक अकादमिक, जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

श्री चन्द्र कुमार शर्मा, अकादमिक अधिकारी, जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

सुश्री सईद काशिफ हाशमी, अकादमिक अधिकारी, जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

आभार

मानव मन के भावों की अभिव्यक्ति ही भाषा कहलाती है। सृष्टि के आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में भाषा का अस्तित्व रहा है। कभी सांकेतिक भाषा के रूप में तो कभी पत्थरों एवं शिलालेखों पर अंकित आकृतियों के रूप में। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ भाषा भी विकसित एवं परिवर्तित होती गई। विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में हिंदी, 'भारोपीय' भाषापरिवार की एक प्रमुख भाषा है। हिंदी भाषा पढ़ने एवं लिखने में अत्यंत सरल एवं सरस है तथा संस्कृत से उद्गम होने के कारण इसकी लिपि अन्य भाषाओं की अपेक्षा स्पष्ट एवं वैज्ञानिक है। यही कारण है कि आज हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा अनेक शिक्षकों, विषय-विशेषज्ञों, शिक्षा शास्त्रियों एवं भाषाविदों की विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित करके हिंदी भाषा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक **'भाषा-प्रवाह' भाग-४** को विकसित किया है। इसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा २०२३ (NCF-SE-2023) में वर्णित लक्ष्यों के अनुरूप तैयार करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक, दक्षता आधारित सामग्री को सरल, रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इसमें भाषा के विकास के साथ-साथ सतत् सीखने की कला, समस्या समाधान, तार्किक और रचनात्मक चिंतन के विकास पर भी बल दिया गया है। बच्चों में भारतीयता, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्र प्रेम, चरित्र-निर्माण, नैतिकता, करुणा, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, भारतीयज्ञान परंपरा एवं वैश्विक चिंतन को विकसित करनेकी दृष्टि से पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा की प्रमुख विधाओं जैसे कविता, कहानी, निबंधा, लेख, एकांकी आदि का समावेश किया गया है, जिससे बच्चे आनंददायी शिक्षण के साथ-साथ भाषा के मौलिक स्वरूप से भी परिचित हो सकें।

'भाषा-प्रवाह' भाग-४ के निर्माण के लिए गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति का मैं आभार प्रकट करता हूँ, जिनके कठोर परिश्रम के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप में आ सकी। इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों एवं प्रकाशकों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास जी का अंतर्मन से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी दूरदर्शिता, योग्यता, विनम्रता एवं प्रेरणा के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप को प्राप्त कर सकी। बोर्ड की सचिव सुश्री मनीषा सरीन जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने पुस्तक निर्माण में समय-समय पर समिति का मार्गदर्शन किया। पुस्तक निर्माण के इस महान कार्य को सुसंपन्न करने के लिए बोर्ड के अकादमिक विभाग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यपुस्तक निर्माण का यह हमारा प्रथम प्रयास था। अत: स्वाभाविक है कि इसमें अनेक संशोधान अपेक्षित होंगे। पुस्तक के अगले संस्करण के लिए आपके अमूल्य सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमंत्रित हैं।

प्रो. (डॉ.) सुधीर सिंह
निदेशक अकादमिक
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए
दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ-सूची

क्र सं	पाठ	
1.	सुमन एक उपवन के	1–6
2.	दाता रणपत	7–17
3.	लल्लेश्वरी	18–25
4.	सीखो	26–32
5.	देश की पुकार	33–36
6.	लखनपुर से कारगिल यद्ध-स्मारक की यात्रा	37–44
7.	तवी की आत्मकथा	45–53
8.	मन के भोले-भाले बादल	54–59
9.	किरमिच की गेंद	60–72
10.	सीलवा हाथी और लोभी मित्र	73–79
11.	दान की हिसाब नीति	80–94
12.	स्वतंत्रता की ओर	95–107
13.	पढ़क्कू की सूझ	108–113
14.	बूझो तो जाने	114–115
15.	मेरे प्यारे शिष्य	116–120

1 सुमन एक उपवन के

S4V5I5

सुमन	पलना	उर	स्वर	भ्रमर
गुंजन	गगन	सूत्र	सुगंध	शृंगार

हम सब सुमन एक उपवन के।
एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जन्में हम,
मिली एक ही धूप हमें है
सींचे गए एक जल से हम।
पले हुए हैं झूल-झूल कर
पलनों में हम एक पवन के।
सूरज एक हमारा, जिसकी
किरणें उर की कली खिलातीं,
एक हमारा चाँद, चाँदनी
जिसकी हम सबको नहलाती।
मिले एक से स्वर हमको हैं
भ्रमरों के मीठे गुंजन के।
रंग-रंग के रूप हमारे
अलग-अलग है क्यारी-क्यारी

लेकिन हम सबसे मिलकर ही
है उपवन की शोभा सारी।
एक हमारा माली, हम सब
रहते नीचे एक गगन के।
काँटों में खिलकर हम सबने
हँस-हँस कर है जीना सीखा,
एक सूत्र में बँधकर हमने
हार गले का बनना सीखा।
सबके लिए सुगंध हमारी
हम शृंगार धनी-निर्धन के।

– द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :-

(क) हम जिसकी मिट्टी में जन्में है, वह कौन है ?

(ख) हम किस पलने में झूलकर पले हैं ?

(ग) हमें एक जैसे स्वर किस के मिलते हैं ?

(घ) "हमारा माली" का क्या अर्थ है ?

(ड) "एक सूत्र में बँधकर" हम क्या बनते हैं ?

(च) हम अपनी सुगंध किसे देते हैं ?

2. वाक्य पूरे करें :-

(क) रंग-रंग के रूप हमारे

.....

लेकिन हम सबसे मिलकर ही

.....

(ख) सूरज .....

किरणें उर की .....

एक हमारा चाँद, चाँदनी

जिसकी .....

(ग) सबके लिए सुगंध हमारी

.....

उद्देश्य :- पाठ का प्रत्यास्मरण।

3. रिक्त स्थान पूरा करें :-

(क) 'सुमन एक उपवन के' कविता के कवि ..... हैं।
(द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, जयशंकर प्रसाद)

(ख) ..... गले का बनना सीखा। (हार, मोती)

4. "जिसकी हैं मिट्टी में जन्में हम" इस वाक्य को ठीक समझने के लिए यों भी लिखा जा सकता है - हम जिसकी मिट्टी में जन्में हैं। इस प्रकार निम्नलिखित वाक्यों का शब्द क्रम बदलकर लिखें :-

क) है मिली एक ही धूप हमें। : .....

ख) मिले एक से स्वर हमको हैं। : .....

ग) सींचे गए हैं एक जल से हम। : .....

उद्देश्य :- गद्य के शब्दक्रम से परिचित होना।

5. पढ़ें, समझें और लिखें :-

हम	हमने	हम को	हमें	हम से
.....	.....	.....	.....	.....
हमारा	हमारे	हमारी	हम पर	
.....	.....	.....	.....	

उद्देश्य :- "हम" के कारकरूपों का अभ्यास।

6. यह वाक्य पढ़ें :-

रंग-रंग के रूप हमारे

इस वाक्य में "रंग" तथा "रंग" के बीच योजक (-) लगा है। कविता में से ऐसे तीन शब्द चुनकर लिखें जिनमें योजक चिह्न लगा हो।

....

उद्देश्य :- योजक चिह्न (-) का अभ्यास।

7. निम्नलिखित वाक्य को पढ़ें और लिखें :-

हमें एक सूत्र में बंधकर गले का हार बनना चाहिए।

.....

.....

उद्देश्य :- लेखन-कौशल का विकास।

शिक्षक संकेत :- शिक्षक बच्चों से इस कविता को कंठस्थ करवाकर कक्षा में गवाकर सुनें। बच्चों से रंग-बिरंगे फूलों के चित्र इकट्ठे करके एलबम में लगाने के लिए कहें।

उद्देश्य :- योग्यता-विस्तार

8. शब्दार्थ :-

सुमन	–	फूल
गगन	–	आकाश
उपवन	–	बाग
भ्रमर	–	भौंरा, भँवरा
गुंजन	–	भौंरों की आवाज़
शृंगार	–	शोभा
निर्धन	–	गरीब
सूत्र	–	धागा
सुगंध	–	खुशबू

10. किसी भी एक फूल का चित्र बनाएँ

उद्देश्य :- सृजनात्मक-शक्ति का विकास।

सुमन एक उपवन के

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी द्वारा रचित 'सुमन' एक उपवन के' कविता में कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि सभी भारतीय सुमन और भारत एक उपवन जैसा है। जिस प्रकार अलग-अलग फूल बगीचे की शोभा बढ़ाते हैं उसी प्रकार भारत में रहने वाले भिन्न भिन्न जातियों-उपजातियों के लोगों के पहनावे, खान-पान, रीति-रिवाज़, हमारे देश की शोभा बढ़ाते हैं। कविता हमें यह भी सिखाती है कि हम एक दूसरे से भिन्न होकर भी मिलकर रह सकते हैं। हमें धनी-निर्धन में कोई भी भेद न करके एक दूसरे का साथ देते हुए देश को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाना है।

2 दाता रणपत

प्रसिद्ध	लोकनायक	सौगंध	शांतिप्रिय	अन्यायी
सदस्य	हथियाना	समर्थन	ध्यानपूर्वक	निर्णय
निर्दोष	प्रलोभन	द्वेष	दानवीरता	बलिदान
श्रद्धा	कुष्ठरोग	छलकपट	न्यायप्रिय	निपटारा

दाता रणपत जम्मू के प्रसिद्ध न्याय-प्रिय व्यक्ति थे। उनके न्याय और सत्य की कई कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। उनकी दानवीरता के कारण उन्हें "दाता" कहकर पुकारा जाता है। उनकी जीवन-गाथा आज भी बड़े चाव और आदर से सुनी सुनाई जाती है।

दाता रणपत का जन्म बीरपुर गाँव में हुआ। बीरपुर जम्मू से लगभग बीस किलोमीटर की दूरी पर है। रणपत के पिता का नाम लक्ष और माता का नाम आलमा था। बचपन से ही रणपत शांतिप्रिय थे। वे लड़ाई-झगड़े से दूर रहते थे। सत्य का पक्ष लेते थे। दीन-दुखियों की सेवा करते थे। उनके न्यायप्रिय और शांतिप्रिय स्वभाव के कारण उन्हें झगड़ों के निपटारे के लिए बुलाया जाता था। रणपत का विवाह छोटी आयु में ही हो गया। उनकी पत्नी का नाम शुक्रा था। शुक्रा ने कठिन समय में सदा रणपत का साथ दिया। उस समय डुग्गर प्रदेश छोटी-छोटी जागीरों में बँटा हुआ था। बीरपुर का

जागीरदार बाँगी चाड़क था। वह बड़ा अन्यायी, कपटी और दुष्ट था। उसने छल-कपट से अपने संबंधियों की भूमि हथिया ली थी। इस कारण बाँगी और उनका झगड़ा चल रहा था। दाता रणपत बीरपुर के सरपंच थे। बाँगी के संबंधियों ने रणपत को झगड़ा निपटाने के लिए बुलाया। बाँगी को अपने बल और जागीरदारी पर घमंड था। वह समझता था कि रणपत उसका समर्थन करेगा। माता आलमा ने बेटे रणपत को बाँगी के झगड़े में न पड़ने के लिए कहा, परन्तु रणपत न माना। उन्हें अपने न्याय और लोगों पर पूरा विश्वास था। "बामना दी बाड़ी" (बाड़ी ब्राह्मणा) में बाँगी तथा उसके संबंधियों के बारह परिवारों के लोग इकठे हुए। सभी ने तिनके धारण कर सौगंध खाई कि वे रणपत का निर्णय मान लेंगे।

रणपत ने सबकी बात ध्यानपूर्वक सुनी। सोच-समझकर जो निर्णय उन्होंने सुनाया उससे सभी प्रसन्न हुए। सबने दाता रणपत की जय-जयकार की। केवल बाँगी चाड़क इस निर्णय से दुखी था, क्योंकि न्याय उसके पक्ष में नहीं था। उसने मन ही मन रणपत की हत्या करवाने की ठान ली।

बाँगी ने कुछ लोगों को लालच देकर रणपत की हत्या करने के लिए कहा पर कोई नहीं माना। वहाँ हेड़ी नाम का एक बदनाम जाट रहता था। बाँगी ने उसे बुलाकर पुरस्कार का लालच दिया, पर हेड़ी ने भी रणपत की हत्या करने से इन्कार कर दिया। रणपत के मौसेरे भाई उससे द्वेष करते थे। बाँगी को इस बात का पता चल गया। उसने उन्हीं को बुलाकर रणपत की हत्या

करने के लिए कहा। उन्होंने रणपत को जाल में फँसाया और धोखे से उनकी हत्या कर दी। बेचारे रणपत निर्दोष मारे गए।

कहते हैं दाता रणपत की हत्या करवाने का परिणाम यह निकला कि बाँगी भी कभी सुखी न रहा। उसे कुष्ठ रोग हो गया। उसके शरीर के अंग गल गए। उसके परिवार के सदस्य भी उसको छोड़ गए।

सत्य और न्याय के लिए दाता रणपत के बलिदान को आज भी स्मरण किया जाता है। लोग बीरपुर जाकर उनकी समाधि पर श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं। रणपत जम्मू के सच्चे लोकनायक थे।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

क) दाता रणपत कौन थे ? रणपत को "दाता" क्यों कहते थे ?

ख) रणपत का स्वभाव कैसा था ?

ग) बीरपुर का जागीरदार कौन था ?

घ) बाँगी ने हेड़ी को लालच क्यों दिया ?

च) "रणपत" के समय डुग्गर प्रदेश की दशा कैसी थी ?

छ) रणपत के बलिदान को क्यों याद किया जाता है ?

उद्देश्य :- पाठ-बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. विलोम शब्द लिखें :-

क)	कठिन	सरल	ख)	सत्य	असत्य
	पुरस्कार	.....		न्याय	.....
	समर्थन	.....		विश्वास	.....
	सुखी	.....		शांति	.....

उद्देश्य :- विलोम शब्दों का ज्ञान।

3. युग्म शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें :-

छोटी-छोटी

उदा॰ :- हमें छोटी-छोटी बातों पर नहीं लड़ना चाहिए।

लड़ाई-झगड़े

.....

बच्चे-बूढ़े

.....

करते-कराते

.....

उद्देश्य :- शब्द-युग्मों का वाक्यों में प्रयोग।

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें :-

शांतिप्रिय, सच्चे, समाधि, श्रद्धा, दीन-दुखियों, कुष्ठ-रोग।

क) दाता रणपत जम्मू के ..... लोकनायक थे।

ख) लोग बीरपुर जाकर उनकी ..... पर ..... के फूल चढ़ाते हैं।

ग) बाँगी को ..... हो गया।

घ) दाता रणपत ..... की सेवा करते थे।

ङ) बचपन से ही रणपत ..... थे।

उद्देश्य :- सही शब्द-चयन।

5. वचन बदलें :-

क)	झगड़ा	झगड़े	ख)	कथा	कथाएँ
	तिनका	.....		लता	.....
ग)	कहानी	.....		लड़ाई	.....
	समाधी	.....		नदी	.....

उद्देश्य :- आकारांत तथा ईकारांत शब्दों का वचन-परिवर्तन।

6. विशेषण शब्दों से संज्ञा शब्द बनाएँ :-

सुंदर	सुंदरता	सरल	सरलता
दानवीर	.....	कठिन	.....
समान	.....	नम्र	.....

उद्देश्य :- विशेषण शब्दों से संज्ञा शब्द बनाना।

7. स्तंभ क, ख और ग में दिए वाक्यांशों को जोड़कर सही वाक्य बनाएँ :-

क	ख	ग
दाता रणपत	जम्मू के प्रसिद्ध लोकनायक के बलिदान को आज भी को जाल में फँसाया और उनकी के मौसेरे भाई उनसे द्वेष	हत्या कर दी थे। याद किया जाता है। करते थे।

उद्देश्य :- उपयुक्त वाक्य रचना का ज्ञान।

8. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाएँ :-

क) पुरस्कार – रमेश को कक्षा में प्रथम आने पर पुरस्कार मिला।

ख) प्रसिद्ध – .....

ग) दाता – .....

घ) शांतिप्रिय – .....

च) कठिन – .....

छ) बलिदान – .....

ज) लोकनायक – .....

उद्देश्य :- शब्दों का वाक्यों में प्रयोग।

9. श्रुतलेख :- शांतिप्रिय, प्रसिद्ध, संबंधी, ध्यानपूर्वक, समर्थन, निर्णय, श्रद्धा, निर्दोष, अन्यायी, लोकनायक, बलिदान, समाधि, मौसेरे, कुष्ठ-रोग, विश्वास।

उद्देश्य :- शुद्ध श्रवण व लेखन का अभ्यास।

10. दाता रणपत के विषय में पाँच वाक्य लिखें :-

.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्य :- प्रत्यास्मरण व लेखन-कौशल का अभ्यास।

11. शिक्षक संकेत :- शिक्षक बच्चों को किसी अन्य लोकनायक के विषय में बताएँ।

उद्देश्य :- लेखन-कौशल अभ्यास।

12. शब्दार्थ :-

दाता	–	देने वाला
प्रसिद्ध	–	मशहूर
लोकनायक	–	लोगों का प्रिय नेता
निर्णय	–	फ़ैसला
जय-जय कार	–	जय बोलना, प्रशंसा करना
हत्या	–	जान से मार देना
पुरस्कार	–	इनाम
छल-कपट	–	धोखेबाज़ी
द्वेष	–	दुश्मनी, बैर, शत्रुता
निर्दोष	–	बेकसूर
कुष्ठरोग	–	कोढ़ की बीमारी
समाधि	–	जहाँ किसी महापुरुष के मृत शरीर को गाड़ा जाता है
कपटी	–	छली, धोखा देने वाला

विश्वास	–	भरोसा
समर्थन	–	किसी मत की पुष्टि करना
सौगंध	–	कसम
ध्यानपूर्वक	–	ध्यान के साथ
शांतिप्रिय	–	शांति चाहने वाला
तिनका धारण करना	–	कसम खाना
कठिन	–	मुश्किल
अन्यायी	–	इंसाफ न करने वाला
कपटी	–	धोखेबाज़
दुष्ट	–	नीच, बुरा काम करने वाला
हथियाना	–	छीनना
संबंधी	–	नातेदार, रिश्तेदार
बलिदान	–	कुर्बानी, त्याग
श्रद्धा	–	आदर, बड़ों के प्रति आदर भाव

दाता रणपत

दाता रणपत जम्मू जिले के बीरपुर नामक गांव में जन्में शांति प्रिय और न्याय प्रिय व्यक्ति थे। असाधारण प्रतिभा के धनी दाता रणपत अपने गांव बीरपुर के सरपंच थे। अपने पद का दायित्व बिना किसी के प्रभाव में आए ईमानदारी से निभाते हुए उन्होंने अपने गांव के एक धनी व्यक्ति जागीरदार बाँगी के विरूद्ध निष्पक्ष निर्णय दिया। इसी कारण उनके प्रति दुर्भावना रखे बाँगी ने देव तुल्य दाता रणपत की हत्या करवा दी। सत्य के पक्षधर, अद्वितीय दानवीर दीन दुखियों के सेवक दाता रणपत वास्तव में सच्चे लोकनायक थे।

Y1L9K7

3 लल्लेश्वरी

प्राकृतिक	आकर्षण	प्रमुख	केन्द्र	काल
रचनाकारों	कश्मीर	शिवभक्त	श्रीनगर	सदी
कीर्तन	जनमानस	उक्तियाँ	सिद्धवचन	आदर
तत्वज्ञान	व्यक्तित्व	सौम्य	व्यापारी	अभिवादन

प्राकृतिक सौंदर्य के कारण कश्मीर सदियों से आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा। कश्मीर की भूमि प्रारंभिक काल से ही साहित्यिक रचनाकारों की विशिष्ट भूमि रही है। कश्मीर अनेक सिद्धों का साधना स्थल रहा है। उनमें शिवभक्त योगिनी लल्लेश्वरी का नाम प्रमुख है। लल्लेश्वरी देवी का जन्म श्रीनगर के निकट स्यमपुर गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। लल्लेश्वरी (1320–1392) चौदहवीं सदी की एक भक्त कवयित्री थी जो कश्मीर की शैव भक्ति परम्परा और कश्मीरी भाषा की एक अनमोल कड़ी थीं। वैवाहिक जीवन सुखमय न होने की वजह से लल्ला ने घर त्याग दिया था और छब्बीस साल की उम्र में गुरु से दीक्षा ली। इन्हें कई नामों से जाना जाता है लल्लेश्वरी, लाल, लल्लारिफ़ा, लल्ला योगेश्वरी, लाली श्री इत्यादि। वह शिव साधिका बनीं। वह भजन – कीर्तन में इतनी लीन रहतीं कि उन्हें लोक–लज्जा का भी कोई ध्यान न रहता। भजनों में मतवाली हो जब वह गलियों और सड़कों

पर घूमती, तब लोग उनका उपहास उड़ाते। उनका बेसुध हो यूं भजन-कीर्तन करना समाज को अच्छा नहीं लगता। बच्चे उन्हें छेड़ते और तंग करते। परंतु उन पर कोई प्रभाव न पड़ता। वह अनेक स्थानों पर घूमती-फिरती। अनेकों का मार्गदर्शन करती रहीं व उपदेश देती रहीं। उनकी उक्तियां 'लल्लवाक्य' नाम से जानी जाती हैं। लल्लेश्वरी ने शैव दर्शन, योग दर्शन, और श्रीमद भगवत गीता के ज्ञान में सराबोर होकर जिस प्रकार से अपनी अनुभूतियों को, अपनी भावनाओं को अपने 'वाखों' (वचनों/छंदों/वाक्यों) को अपनी वाणी द्व ारा सर्वप्रथम कश्मीरी भाषा में ही योग मार्ग, मानव बन्धुता और समदर्शिता का प्रचार किया, उससे कश्मीरी साहित्य रूपी दीपक प्रज्जवलित ही नहीं हुआ है अपितु कश्मीरी जनमानस के मन में बस गया है। कालान्तर में इन 'वाखों' को लिपिबद्ध कर लिया गया जो 'ललवाख' के नाम से कश्मीर के कश्मीरी साहित्य में उच्चतम स्थान रखते हैं। हिन्दू-मुस्लिम दोनों ने उनका समान आदर किया। वह शिव भक्त होने पर भी किसी भी संप्रदाय से परे सत्य की पूजारिन थीं। उनके पद सिद्धवचन हैं, जिसमें उन्होंने अपनी साधना के अनुभवों और अंतिम प्राप्ति का स्पष्ट और नि:संकोच कथन किया हैं। लल्लेश्वरी का व्यक्तित्व सौम्य, सहिष्णु और गंभीर था। सभी प्रकार की बाह्य विडंबनाओं का उन्होंने हमेशा विरोध किया और प्रेम को सबसे बड़ा जीवन मूल्य बताया। उनके तत्वज्ञान पूर्ण काव्यात्मक पदों को वहां के लोग घर घर में आज भी गाते हैं । एक बार भजन- कीर्तन कर लल्लेश्वरी मंदिर लौट रही थीं। रास्ते में कुछ बच्चे उन्हें परेशान करने लगे। बच्चों का उन्हें

तंग करना एक कपड़े के व्यापारी को बिल्कुल पसंद न आया। वह व्यापारी शुद्ध आचरण का था और साधु – संतों का सम्मान करता था। उसने बच्चों को भगा दिया और लल्लेश्वरी देवी का आदर–सत्कार किया। लल्लेश्वरी ने व्यापारी को आशीर्वाद देने के साथ एक सीख भी दी। उन्होंने व्यापारी से एक कपड़ा मांगा। उस कपड़े के उन्होंने दो भाग कर दिए। दोनों टुकड़ों को उन्होंने अपने अपने दोनों कंधों पर अलग–अलग रख लिया और आगे बढ़ी। रास्ते में जब कोई उनका अभिवादन करता तो वह दाएं टुकड़े में एक गाँठ लगाती। उसी तरह जब कोई उनका उपहास उड़ाता तब वह बाएं टुकड़े में गांठ लगाती। वापस लौट कर लल्लेश्वरी ने व्यापारी को दोनों टुकड़ों का वजन करने को कहा। व्यापारी ने वजन किया और पाया की दोनों टुकड़ों का वजन समान है।

इस तरह लल्लेश्वरी ने व्यापारी को समझाया कि जीवन में प्रशंसा और निंदा पर ध्यान नहीं देना चाहिए। दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू मात्र हैं जो एक–दूसरे के पूरक होते हैं। सरल रूप से कह सकते हैं कि प्रशंसा और निंदा को एक समान भाव से ही देखना चाहिए।

अभ्यास

1. **बताएँ और लिखें :-**

क) लल्लेश्वरी का जन्म कब और कहाँ हुआ माना जाता है ?

.....

ख) लल्लेश्वरी को अन्य किन नामों से जाना जाता है ?

.....

ग) लल्लेश्वरी की उक्तियाँ किस नाम से जानी जाती हैं ?

.....

घ) लल्लेश्वरी ने अपने वाखों में किसका प्रचार किया है ?

.....

ग) लल्लेश्वरी ने व्यापारी को क्या सीख दी ?

.....

2. विलोम शब्द लिखिए :-

आरंभ	अंत	विशिष्ट	साधारण
गांव	.....	एक	.....
विवाहित	.....	सत्य	.....
सम्मान	.....	प्रशंसा	.....

3. वाक्य बनाएँ :-

धुन का पक्का– संदीप अपनी धुन का पक्का है, वह अवश्य मैच जीतेगा।

एक ही सिक्के के दो पहलू – .....

अटूट अंग – .....

रोशनी की किरण – .....

योग्यता विस्तार

4. लल्लेश्वरी के अतिरिक्त किसी अन्य कश्मीरी कवि/कवयित्री पर जानकारी एकत्र करें :-

कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य पर लेख लिखें।

प्रत्यस्मरण

5. लल्लेश्वरी किसकी भक्त थी? लल्लेश्वरी किसकी भक्ति करती थी?

(क) लल्लेश्वरी को किस भक्ति परंपरा की कवयित्री कहा जाता है ?

(ख) लल्लेश्वरी का व्यक्तित्व किस प्रकार का था ?

(ग) उन्होंने सबसे बड़ा जीवन मूल्य किसे बताया ?

(घ) प्रशंसा और निंदा के संबंध में लल्लेश्वरी के क्या विचार थे ?

6. समझें और लिखें :-

कश्मीर	–	कश्मीरी	बर्फ़	–	.....
निवास	–	.....	शर्म	–	.....
सरकार	–	.....	रेत	–	.....
विदेश	–	.....	पत्थर	–	.....

व्यापार – ..... फुर्ती – .....

7. स्तंभ क, ख, और ग में दिए वाक्याशों से सार्थक वाक्य बनाकर लिखे ?

क	ख	ग
लल्लेश्वरी देवी	• कश्मीर की प्रसिद्ध • गलियों और सड़कों पर • ने कश्मीरी भाषा में • शिव भक्त होने पर श्री • की उक्तियाँ	• योग मार्ग और मानव बंधुत्व का प्रचार किया • हर संप्रदाय से परे सत्य की पुजारिन थी। • लल्लवाक्य के नाम से जानी जाती हैं • कवयित्री थी। • बेसुध होकर गाया करती थी।

8. शब्दार्थ :-

प्राकृतिक – कुदरती

सौंदर्य – खूबसूरती

भूमि – धरती

उपहास – मज़ाक

उक्ति – कथन

जनमानस – लोग

उच्चतम – सबसे ऊँचा

सत्य	–	सच
सहिष्णु	–	सहनशील
आदर–सत्कार	–	सम्मान
प्रारंभ	–	शुरुआत
विशिष्ट	–	खास

9. निम्नलिखित वाक्यों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

निंदा, लल्लवाक्य, प्रशंसा, आकर्षण, सिद्धों, आशीर्वाद, सीख

(क) प्राकृतिक सौंदर्य के कारण कश्मीर सदियों से ..... का प्रमुख केन्द्र रहा।

(ख) कश्मीर अनेक ..... का साधना स्थल रहा है।

(ग) उनकी उक्तियां ..... के नाम से जानी जाती हैं।

(घ) लल्लेश्वरी ने व्यापारी को ..... देने के साथ एक .... भी दी।

(ङ) उन्होंने व्यापारी को समझाया कि जीवन में ..... और ..... पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

10. श्रुतलेख :-

प्राकृतिक	सौंदर्य	आकर्षण	भूमि	प्रारंभिक
विशिष्ट	सिद्धों	योगिनी	लल्लेश्वरी	चौदहवीं

कवयित्री	छब्बीस	दीक्षा	साधिका	कीर्तन
मार्गदर्शन	उक्तियाँ	लल्लवाक्य	सर्वप्रथम	अनुभूतियों
समदर्शिता	प्रज्ज्वलित	लिपिबद्ध	संप्रदाय	सहिष्णु
काव्यात्मक	तत्वज्ञान	प्रशंसा	सिक्का	निंदा

लल्लेश्वरी

प्रस्तुत पाठ में कश्मीर की शैव भक्ति परम्परा और कश्मीरी भाषा की एक अनमोल कड़ी लल्लेश्वरी से अवगत करवाया गया है। कश्मीरी संस्कृति और स्थानीय लोगों की धार्मिक और सामाजिक आस्थाओं के निर्माण में लल्लेश्वरी का महत्वपूर्ण योगदान है। कश्मीरी साहित्य का अभिन्न अंग लल्लेश्वरी के वाख स्थानीय जीवन और संस्कृति की पहचान हैं।

4 सीखो

नित	कोमल	तरु	स्वदेश	शीश
धीरज	प्राणी	धारा	पथ	पृथ्वी

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित,
सीखो शीश झुकाना।

सीख हवा के झोंकों से लो,
हिलना, जगत हिलाना।
दूध तथा पानी से सीखो,
मिलना और मिलाना।

सूरज की किरणों से सीखो,
जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो,
सबको गले लगाना।

मछली से सीखो स्वदेश के
लिए तड़पकर मरना।

पतझड़ के पेड़ों से सीखो,
दुख में धीरज धरना।
पृथ्वी से सीखो, प्राणी की
सच्ची सेवा करना।
दीपक से सीखो, जितना
हो सके अँधेरा हरना।
जलधारा से सीखो, आगे
जीवन-पथ पर बढ़ना
और धुएँ से सीखो, हरदम
ऊँचे ही पर चढ़ना।

– श्रीनाथ सिंह

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :-

निम्नलिखित से हमें क्या सीख मिलती है :-

भौरों से .....

तरु की झुकी डालियों से .....

हवा के झोंकों से .....

दूध और पानी से .....

सूरज की किरणों से .....

उद्देश्य :- पाठ-बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. निम्नलिखित बातें हम किन से सीखते हैं :-

सबको गले लगाना

स्वदेश के लिए तड़पकर मरना

दुख में धीरज रखना

अँधेरा हरना

सच्ची सेवा करना

उद्देश्य :- पाठ-बोध।

3. "क" भाग को "ख" भाग से मिलाकर सही वाक्य लिखिए :-

क	ख
• दूध और पानी से सीखो	• दुख में धीरज धरना।
• सूरज की किरणों से सीखो	• मिलना और मिलाना।
• पतझड़ के पेड़ों से सीखो	• आगे जीवन पथ में बढ़ना।
• पृथ्वी से सीखो	• जगना और जगाना।
• जलधारा से सीखो	• प्राणी की सच्ची सेवा करना।

उद्देश्य :- 1. सही वाक्य-रचना। 2. पाठ का प्रत्यास्मरण

4. रिक्त स्थानों को सही शब्दों से पूरा करें :-

क) तरु की झुकी ..... से नित सीखो शीश झुकाना।
(डाली/डालियों)

ख) सीख हवा के ..... से लो, हिलना जगत् हिलाना।
(झोंकों/झोंका)

ग) सूरज की ..... से सीखो जगना और जगाना।
(किरण/किरणों)

घ) लता और ..... से सीखो सबको गले लगाना। (पेड़ों/पेड़)

उद्देश्य :- प्रसंग संकेत द्वारा सही शब्द पहचान कर प्रयोग करना।

5. नीचे दिए पदबंधों से उपयुक्त वाक्य बनाएँ:-

गले लगाना - राम ने भरत को प्यार से गले लगा लिया।

धीरज धरना - .....

सच्ची सेवा - .....

जीवन पथ - .....

ऊँचा चढ़ना - .....

उद्देश्य :- वाक्य-रचना।

6. सोचें और लिखें :-

क) पतझड़ में पेड़ों की क्या दशा हो जाती है ?

.....

.....

ख) पृथ्वी प्राणी की सेवा कैसे करती है ?

.....

.....

उद्देश्य :- विस्तृत विवरण की जानकारी प्राप्त करना।

7. विलोम शब्द लिखें :-

क)	हँसना	रोना	स्वदेश	परदेश
	कोमल	.....	दुख	.....
	जगना	.....	अँधेरा	.....
	चढ़ना	.....	जीवन	.....

उद्देश्य :- विलोम शब्दों का ज्ञान।

ख) उदाहरण देखकर क्रिया बदले :-

	मिलना	मिलाना	पढ़ना	पढ़ाना
	जगना	.....	चढ़ना	.....

उद्देश्य :- प्रेरणार्थक क्रिया-निर्माण।

8. पढ़ें, समझें और लिखें :-

क)	जैसे :-	तरु,	चारु,	रुचि,	अरुण,
		.....	.....	.....	.....
ख)	जैसे :-	शुरू,	रूस	गुरूर,	रूपक,
		.....	.....	.....	.....

उद्देश्य :- र के साथ " ु " और " ू " की मात्रओं का प्रयोग।

9. सोचें और लिखें :-

आपने अपने घर-परिवार या आस-पड़ोस से क्या-क्या सीखा ?

.....

.....

.....

.....

.....

उद्देश्य :- लेखन-कौशल का अभ्यास

10. शब्दार्थ :-

कोमल	–	नरम, नाज़ुक
नित	–	सदा
तरु	–	वृक्ष, पेड़
शीश	–	सिर
स्वदेश	–	अपना देश
धीरज	–	हिम्मत, शांत भाव, मन की स्थिरता
प्राणी	–	जीव-जंतु
धारा	–	पानी आदि की धार
पथ	–	रास्ता
पृथ्वी	–	ज़मीन

उद्देश्य :- शब्दार्थ-ज्ञान।

10. दीपक का चित्र बनाएँ :-

उद्देश्य :- सृजनात्मक-शक्ति का विकास।

सीखो

श्रीनाथ सिंह द्वारा रचित कविता "सीखो" प्रकृति के विभिन्न उपकरणों से सीख लेते हुए साकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने का संदेश देती है। कविता से हमें शिक्षा मिलती है कि हम फूलों से हमेशा प्रसन्न रहना, सूरज की किरणों से जगना और जगाना, जलधारा से आगे बढ़ना, और धुँए से सदा ऊपर उठना सीखकर अपने जीवन को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर बना सकते हैं। हमें चाहिए कि हम प्रकृति से सदैव शिक्षा ग्रहण करते रहें।

5 देश की पुकार

होनहार देश के, कर्णधार देश के।
देश की पुकार पर, आज तुम बढ़े चलो।
मातृभूमि के लिए, प्राण के जला दिए।
तुम नई बहार को ख़ून का शृंगार दो।
जोश यह घटे नहीं, पाँव अब हटें नहीं।
पाठ स्वाभिमान का आज तुम पढ़े चलो।
होनहार देश के कर्णधार देश के
देश की पुकार पर आज तुम बढ़े चलो।
मेदिनी दहल उठे, सिंधु भी मचल उठे,
तुम जिधर चरण धरो, जीत का वरण करो।
तुम कहीं रुको नहीं, तुम कहीं झुको नहीं।
आज आसमान पर शान से बढ़े चलो
होनहार देश के कर्णधार देश के
देश की पुकार पर आज तुम बढ़े चलो
देश के गुमान तुम, सूरमा महान तुम।
तुम अमर सपूत हो, तुम क्रांति दूत हो।
काल से कराल बन, और बेमिसाल बन।

त्याग की कहानियाँ, आज तुम गढ़े चलो।

होनहार देश के कर्णधार देश के

देश की पुकार पर आज तुम बढ़े चलो।

अभ्यास

1. शब्दार्थ :-

शब्द	–	अर्थ
कर्णधार	–	(कर्ण – नौका का अगला हिस्सा) नौका नाव चलाने वाला
मेदिनी	–	धरती
कराल	–	भयंकर
बेमिसाल	–	जिसकी तुलना न हो।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(क) कविता में 'होनहार देश के' एक संबोधन है, दूसरा संबोधन लिख दीजिए।

(ख) कवि प्राण के दीए किसके लिए जलाने को कहता है ?

(ग) कवि नई बहार के लिए क्या करने के लिए कह रहा है ?

(घ) कविता में कवि ने किसे पाठ पढ़ाया है ?

(ङ) तुम्हारे कदम बढ़ाने से धरती और समुद्र का क्या हो जाएगा ?

3. नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में उचित शब्दों को भरिए :-

तुम जिधर .....धरो ..... का ..... करो।

..... कहीं ..... नहीं, तुम .....

..... झुको .....।

आज ..... पर, ... से ..... चलो।

तुम ..... सपूत ..... क्रांति ..... हो।

4. उचित शब्दों के साथ मिलान कीजिए :-

1.	प्राण के	1.	स्वाभिमान का
2.	ख़ून का	2.	वरण करो
3.	पाठ	3.	कराल बन
4.	आज आसमान पर	4.	घटे नहीं
5.	सूरमा	5.	जला दीए
6.	काल से	6.	शृंगार दो
7.	जीत से	7.	शान से बढ़े चलो
8.	जोश यह	8.	महान तुम

5. सही पर (✓) तथा गलत पर (X) चिह्न लगाएँ :-

क) होनहार विदेश के कर्णधार देश के [ ]

ख) देश की पुकार पर आज तुम बढ़े चलो [ ]

ग) मातृभूमि के लिए प्राण के जला दीए [ ]

घ) तुम नई बहार को ख़ून का शृंगार दो [ ]

ङ·) गाँठ स्वाभिमान का आज तुम बढ़े चलो [ ]

5. कविता के आधार पर लयात्मक शब्दों की लड़ी बनाइए :-

.....

.....

6. श्रुतलेख :-

1. होनहार	2. कर्णधार	3. मातृभूमि	4. स्वाभिमान
5. बेमिसाल	6. क्रान्ति	7. गुमान	8. सूरमा

7. पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

1. देश	2. भूमि	3. सिन्धु	4. आसमान
5. काल	6. त्याग	7. चरण	8. होनहार

8. शिक्षक के लिए :-

शिक्षक इसी प्रकार की राष्ट्रप्रेम की अन्य कविता बच्चों को पढ़कर सुनाएं तथा उन्हें भी ऐसी ही राष्ट्रप्रेम की कविताएँ सुनाने के लिए प्रेरित करें।

5 लखनपुर से कारगिल युद्ध-स्मारक की यात्रा

P2U7T2

कारगिल	पर्यटन	स्मारक	विकल्प	महामार्ग
प्राकृतिक	यात्रा	आरंभ	गंतव्य	श्रद्धालु
विश्राम	डल झील	दुर्गम	सिन्धु	युद्ध-स्मारक
शाम	आकर्षण	पारंपरिक	व्यंजन	आदर-सत्कार

कारगिल लद्दाख का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। बौद्ध मठों के अतिरिक्त यहाँ कई अन्य स्थान भी देखने योग्य हैं। कारगिल जिला कश्मीर घाटी के उत्तर-पूर्व पर स्थित है। यह स्थान श्रीनगर से 205 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कारगिल के पास ही एक अन्य शहर और हिल स्टेशन है, जिसे द्रास तथा स्थानीय रूप से हेमबाब तथा हुमास के नाम से जाना जाता है। इसे अक्सर "लद्दाख का प्रवेश द्वार" भी कहा जाता है।

कारगिल जाने के तीन विकल्प हैं पहला - जम्मू कश्मीर राष्ट्रीय राजमार्ग जो वर्ष के कुछ महीनों को छोड़कर पूरा साल यातायात के लिए खुला रहता है। दूसरा - हिमाचल प्रदेश के मनाली से लेह होते हुए कारगिल पहुँचता है। तीसरा - हवाई जहाज से लेह फिर लेह से सड़क मार्ग द्वारा कारगिल। परन्तु जो आनंद सड़क की यात्रा में आता है वह हवाई जहाज़ में नहीं आता है, क्योंकि हम प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेने से वंचित रह जाते हैं। बच्चों!

हम इस पाठ में लखनपुर, जिसे जम्मू कश्मीर का प्रवेश द्वार कहते हैं, यहीं से अपनी यात्रा आरंभ करेंगे।

मित्रों द्वारा जब मुझे गर्मियों की छुट्टियों में इस यात्रा का प्रस्ताव मिला तो मन खुशी से झूम उठा और मैंने बिना किसी देरी के हाँ कर दी। तय दिन हम सभी मित्र एक किराए की गाड़ी लेकर अपने पहले से निर्धारित गंतव्य की ओर चल पड़े। लखनपुर से कारगिल तक की दूरी 498 कि.मी. है, लखनपुर से कठुआ होते हुए हम लगभग 2 घण्टे में मन्दिरों के शहर जम्मू पहुँच गए। छुट्टियों में बाहरी राज्यों से अनेक श्रद्धालु जम्मू वैष्णो देवी की यात्रा तथा कश्मीर में घूमने के लिए आते हैं। सड़के पर्यटकों के वाहनों से भरी पड़ी थी। जम्मू से श्रीनगर की दूरी 248 कि.मी. है, लगभग 6 घण्टें में हम श्रीनगर पहुँच गए। उधमपुर से 25 कि.मी. की दूरी पर "श्यामा प्रसाद मुखर्जी सुरंग" जो "चेनानी नाशरी सुरंग" के नाम से भी जानी जाती है जो उधमपुर को रामबन से जोड़ती है की सुखदायक यात्रा ने हमारा मन मोह लिया।

श्रीनगर में डल झील के किनारे होटल में रात्रि विश्राम कर जब सुबह आगे की यात्रा के लिए निकले तो झील के पानी पर पड़ती उगते सूर्य की किरणों ने, तो कहीं देवदार से छन कर आती सूर्य की किरणों ने बरबस ध्यान अपनी ओर खींच लिया। हिमालय की बर्फ़ से ढँकी ऊँची पर्वतमालाओं से आती ठंडी हवाओं के झोंको ने पिछले दिन की सारी थकान को मिटाकर हम सबमें नया जोश भर दिया। सोनमार्ग के पास पहुँचते ही पर्यटकों की भीड़ देखने को मिली। यहाँ अनेक गेस्ट हाउस, होटल तथा टैंट लगे थे, जिनमें

उत्साही युवक भरे पड़े थे। यह स्थान अपनी साफ हवा तथा ट्रैकिंग के लिए जाना जाता है।

सोनमार्ग के आगे दुर्गम रास्ता आरंभ होता है, अब हरे भरे पहाड़ों का स्थान नंगे पहाड़ों ने ले लिया सड़क भी अपेक्षाकृत तंग होने लगी। भूस्खलन तथा सर्दियों की भारी बर्फ़बारी के कारण सड़क को पहुँचा नुकसान साफ़ देखा जा सकता था।

अभी भी बर्फ़ पूरी तरह से पिघली नहीं थी। कहीं कहीं पर छिटपुट बर्फ़ अभी भी पहाडी कोनों में पड़ी हुई थी। एक बार तो सड़क के एक तरफ की ढलान ने मन में भय सा उत्पन्न कर दिया। बालटाल से लगभग 3528 मीटर की ऊंचाई पर जोज़ीला दर्रा स्थित है। जोज़ीला को पार कर हम गुमरी से होते हुए द्रास नामक स्थान पर पहुँचते हैं। द्रास 3300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एक सुन्दर कस्बा है। इसका नाम इस घाटी में बहने वाली नदी द्रास पर पड़ा है, जो आगे कारगिल के पास जाकर सिन्धु नदी में मिल जाती है। द्रास को लद्दाख का प्रवेश द्वार भी कहते हैं। यह भारत के सबसे ठंडे शहरों में से एक है, और सर्दियों में यहाँ का तापमान लगभग –45 से लेकर – 60° सेंटीग्रेड तक गिर जाता है। रूस के साइबेरिया के बाद यह दुनिया की दूसरी सबसे सर्द इंसानों की बस्ती है, और यहाँ स्थित है कारगिल युद्ध स्मारक, जो 1999 में कारगिल यद्ध में शहीद हुए सैनिकों के सम्मान में बनाया गया है।

स्मारक के प्रवेश द्वार पर माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' लिखी हुई है। स्मारक के अंदर केन्द्र में अमर जवान ज्योति है।

इसके ठीक ऊपर एक टावर है जिस पर 'ऑपरेशन विजय' लिखा है। इसके ऊपर भारतीय तिरंगा झंडा लहराता है। इसके पीछे स्मारक दीवार है जिस पर कारगिल युद्ध में जान गँवाने वाले शहीदों के नाम लिखे हैं। इस स्मारक ने हमारी आँखों को नम कर दिया तथा हृदय की धड़कनों को जोश से भर दिया और हमने भीगी आंखों से उस स्मारक को अपनी यादों में समेट कर आगे की राह पकड़ी।

द्रास नदी के साथ-साथ सड़क कारगिल की ओर जाती है, कारगिल पहुँचते समय शाम ढल आई थी।

दूसरे दिन प्रातः से ही हम घूमने निकले। हमने मुलबेख गोम्पा, शरगोल मठ, कनिक स्तूप आदि जगहों को देखा। कारगिल बाज़ार महत्वपूर्ण रेशम मार्ग के साथ एक महत्वपूर्ण व्यापार के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। आज भी कारगिल बाजार आकर्षण का केन्द्र है। इसे बाल्टी बाज़ार के रूप में पहचाना जाता है जो लद्दाख, पश्चिमी हिमालय तथा काराकोरम से जुड़ी अद्वितीय मिट्टी और लकड़ी की वास्तुकला का दूत है। यहाँ के बाज़ार में अनेक आधुनिक रेस्तराँ हैं, जो आधुनिक व्यंजनों के साथ- अपने पारंपरिक व्यंजनों जैसे 'मोमो' तथा 'थुपका' उपलब्ध करवाते हैं। कारगिल शब्द दो शब्दों 'खार' और 'आरकिल' से मिलकर बना है। 'खार' का अर्थ है 'महल' और 'आरकिल' का अर्थ है 'केन्द्र'। स्थानीय भाषा में 'गार' का का अर्थ है "कहीं भी" और "खिल" का अर्थ है 'एक केन्द्रीय स्थान' जहाँ लोग रह सकें। कई वर्षों के बाद खार किले को 'कारगिल' के रूप में पहचाना जाने लगा।

यहाँ के लोग अत्यंत भोले, मेहमानों का आदर सत्कार करने वाले तथा खुले मन से स्वागत करने वाले हैं।

– देविन्द्र सिंह

अभ्यास

लिखित

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

(क) कारगिल कहाँ स्थित है ?

(ख) कारगिल तक कैसे पहुँचा जा सकता है ?

(ग) श्यामा प्रसाद मुखर्जी सुरंग किस स्थान पर बनी है ?

(घ) जोज़ीला दर्रे का रास्ता कैसा है ?

(ङ) कारगिल युद्ध स्मारक किस युद्ध की याद में बना है ?

मौखिक

2. निम्नलिखित प्रश्नों पर कक्षा में मौखिक चर्चा करें :-

(क) लखनपुर से कारगिल की दूरी कितनी है ?

(ख) कारगिल युद्ध किन देशों के बीच हुआ ?

(ग) कारगिल के लोगों के पारंपरिक व्यंजन कौन-कौन से हैं ?

(घ) द्रास क्यों प्रसिद्ध है ?

4. पढ़ें, समझें और लिखें :-

खाना	–	खाता हुआ	उतरना	–	उतरता हुआ
घूमना	–	.....	देखना	–	.....
चलना	–	.....	चढ़ना	–	.....

5. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें :-

क) कारगिल भारत के ..... में स्थित है। (पूर्व/उत्तर)

ख) ..... समुद्रतल से 3300 मीटर ऊँचा है। (कारगिल/द्रास।)

ग) कारगिल विजय स्मारक ..... में स्थित है। (द्रास/कारगिल)

घ) ..... कश्मीर में स्वास्थ्यवर्धक स्थानों में से एक है। (जोजीला/जंस्कार)

ड॰) द्रास का नाम ..... पर पड़ा है। (द्रास नदी/सिन्धु नदी)

6. अपने निकटवर्ती क्षेत्र में किसी भी शहीद स्मारक का भ्रमण करें तथा इस पर एक दस वाक्यों का लेख लिखें।

7. शब्दार्थ :-

स्वास्थ्यवर्धक	–	सेहत बढ़ाने वाला
पर्यटक	–	सैलानी, घूमने के लिए आने वाले

प्राकृतिक – कुदरती

दर्रा – पहाड़ को पार करने का स्थान

स्मारक – वीरगति को प्राप्त लोगों की याद में बना स्थल

मोमो – द्रास, कारगिल, लेह के लोगों का पारंपरिक व्यंजन

8. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाएं :–

1.	लद्दाख	–	लद्दाखी	2.	निवास	–	.....
3.	सरकार	–	.....	4.	विदेश	–	.....
5.	बर्फ़	–	.....	6.	शर्म	–	.....
7.	रेत	–	.....	8.	पत्थर	–	.....

9. शिक्षक कक्षा में कारगिल युद्ध के शहीद हुए, कुछ वीर सैनिकों के विषय में कक्षा में बताएं।

1. राइफलमैन संजय कुमार
2. कैप्टन विक्रम बत्रा
3. मेजर अजय जसरोटिया
4. ले. मनोज कुमार पांडे
5. कैप्टन सौरभ कालिया

लखनपुर से कारगिल युद्ध स्मारक की यात्रा

देविन्द्र सिंह द्वारा रचित "लखनपुर से कारगिल युद्ध स्मारक की यात्रा" रोचक ढंग से लिखा गया यात्रा वृत्तांत है। जम्मू-पठानकोट राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित लखनपुर, जिसे जम्मू कश्मीर का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है, से आरंभ इस यात्रा में कारगिल के द्रास में "ऑपरेशन विजय" के शहीदों की याद में बनाए गए युद्ध स्मारक सहित यात्रा के दौरान आए विभिन्न शहर और वहाँ के प्रसिद्ध स्थलों का भी विवरण दिया गया है। यात्रा वृत्तांत विद्यार्थी वर्ग को यात्रा के अनुभव दिलवाने में समर्थ है।

7 तवी की आत्मकथा

K8W6L3

जलाशय	चट्टान	निर्जन	देवालय	पाट
छावनी	राजमार्ग	शिवालय	श्रद्धा	धाम

मैं तवी हूँ। मेरा जन्म कब हुआ, मुझे नहीं मालूम। जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में एक सुंदर स्थल है - भद्रवाह, जिसे "छोटा कश्मीर" भी कहते हैं। भद्रवाह में एक ऊँचे पहाड़ पर "वासुकिकुंड" नामक एक जलाशय है। यही मेरा जन्मस्थान है। जन्म के समय मैं एक छोटे पहाड़ी-नाले के रूप में बहती हूँ। जगह-जगह कई और छोटे-छोटे सुंदर स्रोतों तथा बर्फ़ीले नालों का पानी मुझमें आकर मिलता है। इन से मेरा आकार बढ़ता जाता है। मैं जंगलों और

पहाड़ी चट्टानों को काटते हुए आगे बहती जाती हूँ। खड़ी चट्टानों और निर्जन वनों के बीच मैं अकेली ही गुज़रती हूँ। पशु-पक्षी भी कम ही नज़र आते हैं। जहाँ कहीं थोड़ा समतल है वहाँ मनुष्यों ने मेरे किनारों पर घाट और देवालय बनाए हैं। इन देवालयों में शिव-मंदिर ज़्यादा हैं। ऐसे स्थलों पर मुझे "सूर्य-पुत्री" कहते हैं। कुछ प्राचीन ग्रंथों में मेरा नाम "तविषी" है। 'तविषी' ही आगे चलकर तवी हो गया है। लोगों का विश्वास है कि मेरे स्वच्छ जल में स्नान करने से पाप धुल जाते है।

मैं अनेक पर्वतों को पार करती हुई मानतलाई, विनिसंग और दशालय से होते हुए बहती हूँ। इन तीनों स्थानों पर तीर्थ स्थान हैं, जहाँ सैंकड़ों यात्री आकर नहाते हैं और पूजा-अर्चना करते हैं। यहाँ से चलते-चलते मैं सुद्ध महादेव पहुँचती हूँ। सुद्ध महादेव मेरे किनारे पर बसा एक गाँव है। यह

महादेव जी के मंदिर के कारण प्रसिद्ध है। इस तीर्थ स्थान पर हर साल बड़ा मेला लगता है।

सुद्ध महादेव से मैं कहीं समतल तो कहीं ऊबड़-खाबड़ स्थलों पर यात्रा करती हुई देविका पहुँच जाती हूँ। देविका एक पवित्र धाम है। जहाँ लोग नवरात्रों में पूजा-अर्चना करते हैं।

पहाड़ी यात्रा की उछलकूद से थकी मांदी अब मैं कुछ विश्राम करना चाहती हूँ, इसलिए नगरोटा के पास समतल भूमि पाकर उस पर फैल जाती हूँ और मेरी गति धीमी हो जाती है। यहाँ मेरे दाएँ किनारे पर नगरोटा कस्बा बसा है। मैं जगह-जगह बहुत से लोगों को काम में लगे देखकर विस्मय और हर्ष से भर जाती हूँ। मुझे इस बात का हर्ष होता है कि मैं केवल निर्जन स्थानों की ही नहीं बल्कि जन-जन की सेवा करती हूँ। नगरोटा से जम्मू तक मेरा पथ रेतीला है। मेरा पाट कहीं-कहीं सैंकड़ों मीटर चौड़ा हो जाता है। यह देखकर मैं पहाड़ी रास्ते की सारी थकान भूल जाती हूँ और पतली धाराओं में बँट कर आराम से आगे बढ़ती हूँ। यहाँ मेरे दाएँ किनारे पर "सीतला माता" का प्राचीन मंदिर अब तक खड़ा है। थोड़ा आगे अपने किनारों पर देश के वीर सेनानियों की आवाजाही देखकर मेरा हृदय हर्ष और गर्व से भर जाता है। साफ-सुंदर छावनियों की बग़ल में बहना मुझे सदा अच्छा लगता है।

अब मैं एक बहुत बड़े आधुनिक पुल के नीचे से गुज़रती हूँ। यह कश्मीर से आने वाले राजमार्ग को पठानकोट जाने वाले राजमार्ग से मिलाने वाला

एक नया पुल है। नए पुल के साथ ही मेरे बाएँ किनारे पर सिधड़ा नगरी (नव-जम्मू) बस रही है।

बाढ़ के समय कौन व्याकुल नहीं होता! मैं भी अपने आपको बस में रख नहीं पाती। सन् 1950 की बाढ़ से मेरा आकार इतना फैल गया था कि बाईं ओर मैंने महामाया मंदिर की पहाड़ी को छुआ तो दाईं ओर अमरमहल और मुबारकमंडी वाली पहाड़ी को ऊपर तक अपनी लपेट में ले लिया। पर उसके बाद मैंने अपना रुख बदलना शुरू किया और जम्मू शहर की पहाड़ी के दामन से तथा पीरखोह के पास से गुज़रती हुई बहने लगी। मेरे बाएँ किनारे पर ऐतिहासिक बाहु किला जम्मू के एक महत्त्वपूर्ण चिह्न के रूप में खड़ा इस बात की गवाही दे रहा है कि राजा बाहुलोचन और राजा जांबूलोचन ने वीरता और

संकल्प के साथ दो शहर बसाए थे। बाहू किले के आँचल में उधमपुर रेलवे लाइन बिछी है जो यात्रियों को वैष्णो देवी और कश्मीर तक का सुहाना सफ़र करवाती है।

आज से लगभग तीस वर्ष पहले तक जम्मू शहर केवल दाएँ किनारे की पहाड़ी पर लगभग 40–50 वर्ग किलोमीटर पर बसा हुआ था। अब तो यह फैलकर कई गुणा बढ़ गया है। मंदिरों के इस शहर ने शांति और भाई–चारे की परंपरा को कठिन समय में भी बनाए रखा है। मेरे ऊपर बना पुराना पुल (तवी पुल) नया बनकर शहर की दर्जनों नई बस्तियों को मिलाता है और लोगों की आर्थिक उन्नति में योगदान दे रहा है। पुल से थोड़ा आगे पुराने बिजली घर के पास मेरे तल (भूतल) के नीचे से जम्मू की प्रसिद्ध "रणवीर नहर" गुज़रती है। यह नहर अखनूर के पास चिनाब नदी से निकलकर रणवीर सिंह पुरा तक भूमि को सींचती है।

जम्मू शहर से निकलकर मैं दो शाखाओं "निक्की तवी" और "बड़ी तवी" में बँट जाती हूँ। "निक्की तवी" के रूप में मैं मंडाल, सोहाँजना, मकवाल से गुज़रती हुई चिनाब से जा मिलती हूँ और "बड़ी तवी" के रूप में भगतपुर से होते हुए चिनाब में ही गिर कर अपनी यात्रा समाप्त करती हूँ।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-**

क) भद्रवाह को किस नाम से जाना जाता है ?

.....

ख) तवी का जन्मस्थान कहाँ है ?

.....

ग) तवी का पुराना नाम क्या है ?

.....

घ) तवी के पानी की गति किस स्थान से धीमी होने लगती है ?

.....

उद्देश्य :- पाठ-बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. सही कथन के सामने ✓ तथा गलत कथन के सामने X लगाएँ :-

क) भद्रवाह जम्मू-कश्मीर क्षेत्र का सुंदर स्थल है। [ ]

ख) जन्म के समय तवी का आकार बहुत बड़ा होता है। [ ]

ग) तवी के किनारों पर कई प्रसिद्ध तीर्थ स्थान बने हैं। [ ]

घ) सुद्ध महादेव तवी के किनारे पर बसा एक गाँव है। [ ]

च) बाढ़ के समय तवी का आकार घट जाता है। [ ]

उद्देश्य :- सही और गलत का विवेक।

3. संधि करें :-

देव + आलय – देवालय शिव + आलय .....

हिम + आलय – ..... कार्य + आलय .....

विद्या + आलय – ..... पुस्तक + आलय .....

उद्देश्य :- संधि-ज्ञान।

4. सही शब्दों से वाक्य पूरे करें :-

जलाशय, नाले, तवी, पर्वतों, सुद्ध महादेव।

क) ..... तवी के किनारे पर बसा एक गाँव है।

ख) भद्रवाह में एक ऊँचे पहाड़ पर वासुकिकुंड नामक एक .....है।

ग) तवी को अपनी यात्रा में अनेक ..... से गुज़रना पड़ता है।

घ) जन्म के समय तवी छोटे ..... के रूप में बहती है।

ङ) बाढ़ के समय ..... अपने आपको बस में नहीं रख पाती।

उद्देश्य :- उपयुक्त शब्दों से वाक्य पूर्ति।

5. निम्नलिखित शब्दों में अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ) लगाएं :-

अनुस्वार (ं)		अनुनासिक (ँ)	
सुदर	.....	पहुच	.....
कुड	.....	दाया	.....

जगल	.....	ऊट	.....
मगल	.....	ऊचा	.....
चचल	.....	हू	.....
अग	.....	जहा	.....

उद्देश्य :- अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिकता (ँ) का ज्ञान।

6. निम्नलिखित वाक्यों का सही शब्दक्रम लिखिए :-

(क) जम्मू तक/नगरोटा/पथ रेतीला/से/तक मेरा/है।

उत्तर: नगरोटा से जम्मू तक मेरा पथ रेतीला है।

(ख) हैं/'छोटा कश्मीर'/भी/कहते/भद्रवाह/जिसे।

(ग) में/ग्रथों/प्राचीन/है/'तविषी'/नाम/मेरा/

(घ) सिधरा/नगरी/है/मेरे/बसी/किनारे/बाँए।

7. क) जम्मू-कश्मीर की चार प्रसिद्ध नदियों के नाम लिखें ।

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

ख) तवी नदी के किनारे पर स्थित महामाया वन जाने का कार्यक्रम बनाएँ और भ्रमण के आधार पर लेख लिखें :-

उद्देश्य :- योग्यता-विस्तार।

8. शब्दार्थ :-

जलाशय	–	झील, तालाब, स्त्रोत, चश्मा
चट्टान	–	पत्थर का बड़ा खंड, शिला
निर्जन	–	जिस स्थान में कोई मनुष्य न हो
देवालय	–	देवस्थान, मंदिर
पाट	–	विस्तार, फैलाव, चौड़ाई
छावनी	–	सेना के रहने-ठहरने की जगह
राजमार्ग	–	राजपथ, मुख्यमार्ग

उद्देश्य :- शब्दार्थ-ज्ञान।

तवी की आत्मकथा

आत्मकथात्मक शैली में रचित यह लेख तवी नदी के उद्गम स्थल से लेकर उसकी यात्रा के विभिन्न पड़ावों को रोचक ढंग से दर्शाता है। भद्रवाह के एक गगनचुंबी पहाड़ पर स्थित 'वासुकिकुंड' नामक जलाशय तवी का उद्गम स्रोत है। कुछ स्थानों पर इसे तविषी भी कहा गया है। कालांतर में यही तविषी तवी के रूप में परिवर्तित हो गया। अपने अंतिम पड़ाव में तवी चिनाब नदी में मिलकर उसमें विलीन हो जाती है।

8 मन के भोले-भाले बादल

E4P2T6

झब्बर-झब्बर बालों वाले
गुब्बारे से गालों वाले
लगे दौड़ने आसमान में
झूम-झूम कर काले बादल।

कुछ जोकर-से तोंद फुलाए
कुछ हाथी-से सूँड उठाए
कुछ ऊँटों-से कूबड़ वाले
कुछ परियों-से पंख लगाए

आपस में टकराते रह-रह
शेरों से मतवाले बादल।

कुछ तो लगते हैं तफ़ूानी
कुछ रह-रह करते शैतानी
कुछ अपने थैलों से चुपके
झर-झर-झर बरसाते पानी

नहीं किसी की सुनते कुछ भी
ढोलक-ढोल बजाते बादल।

रह-रहकर छत पर आ जाते
फिर चुपके ऊपर उड़ जाते
कभी-कभी ज़िद्दी बन करके
बाढ़ नदी-नालों में लाते
फिर भी लगते बहुत भले हैं
मन के भोले-भाले बादल।

कल्पनाथ सिंह

कविता के आधार पर

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(क) बादल नदी नालों में बाढ़ कैसे लाते होंगे ?

(ख) बादल कैसे ढोल बजाते होंगे ?

(ग) बादल कैसी शैतानियाँ करते होंगे ?

(घ) बादल की तुलना किन-किन से की गई है ?

2. कक्षा में बातचीत के लिए मौखिक प्रश्न

(क) तूफ़ान क्या होता है ? बादलों को तफ़ानी क्यों कहा गया है ?

(ख) साल के किन-किन महीनों में ज़्यादा बादल छाते हैं ?

(ग) कविता में 'काले' बादलों की बात की गई है। क्या बादल सचमुच काले होते हैं ?

(घ) कक्षा में बातचीत करो और बताओ कि बादल किन-किन रंगों के होते हैं।

3. भिन्न-भिन्न प्रकार के बादलों के चित्र बनाएं।

काले-काले डरावने	गुब्बारे-से गालों वाले

हल्के-फुल्के सुहाने

ख) कविता में बादलों को 'भोला' कहा गया है। इसके अलावा बादलों के लिए और कौन-कौन से शब्दों का इस्तेमाल किया गया है ? नीचे लिखे अधूरे शब्दों को पूरा करो।

म..... ज़ि.....

शै..... तू .....

बारिश की आवाज़ें

कुछ अपने थैलों से चुपके

झर-झर-झर बरसाते पानी

पानी के बरसने की आवाज़ है झर-झर-झर!

पानी बरसने की कुछ और आवाज़ें लिखो।

....

....

....

4. कैसे-कैसे पेड़ बादलों की तरह पेड़ भी अलग-अलग आकार के होते हैं। कोई बरगद-सा फैला हुआ और कोई नारियल के पेड़ जैसा ऊँचा और सीधा।

अपने आसपास अलग-अलग तरह के पेड़ देखो। तुम्हें उनमें कौन-कौन से आकार दिखाई देते हैं ? सब मिलकर पेड़ों पर एक कविता भी तैयार करो।

5. युग्म शब्द :-

कविता में आए युग्म शब्दों को ढूँढ़कर लिखें ।

जैसे :- भोले - भाले

(क) ..... (ख) ..... (ग) .....

(घ) ..... (ङ) ..... (च) .....

6. श्रुतलेख :-

(क) गुब्बारे (ख) टकराते (ग) मतवाले (घ) बरसाते

(ङ) ढोलक (च) ज़िद्दी (छ) जोकर (ज) कूबड़

7. शब्दार्थ :-

झब्बर	-	बड़े तथा घने
तोंद	-	बढ़ा हुआ पेट
कूबड़	-	पीठ का उभरा हुआ या झुका हुआ टेढ़ापन
मतवाले	-	मस्त
शैतानी	-	शरारत, शरारत वाला काम
ज़िद्दी	-	हठी
भले	-	अच्छे
भोले-भाले	-	सरल, निश्छल

मन के भोले-भाले बादल

कल्पनाथ सिंह द्वारा रचित "मन के भोले-भाले बादल" कविता में बादलों को अलग-अलग रूप में चित्रित किया गया है। वास्तव में कवि यह समझाने का प्रयास कर रहें है कि बादल विभिन्न आकार के होते हैं और इन बादलों को देखना बच्चों की अपनी-अपनी कल्पना पर निर्भर करता है। काले रंग वाले बादलों के गाल गुब्बारे जैसे फूले हुए हैं और उन्हें झूम झूमकर आसमान में दौड़ लगाता पढ़कर विद्यार्थी रोंमाचिंत होंगे।

9 किरमिच की गेंद

K1F6V8

गर्मी की छुट्टियाँ थीं। दोपहर के समय दिनेश घर में बैठा कोई कहानी पढ़ रहा था। तभी पेड़ के पत्तों को हिलाती हुई कोई वस्तु धाम से घर के पीछे वाले बगीचे में गिरी। दिनेश आवाज़ से पहचान गया कि वह वस्तु क्या हो सकती है। वह एकदम से उठकर बरामदे की चिक सरका कर बगीचे की ओर भागा।

"अरे! अरे! बेटा, कहाँ जा रहा है ? बाहर लू चल रही है।" दिनेश की माँ मशीन चलाते-चलाते एकदम ज़ोर से बोलीं। परंतु दिनेश रुका नहीं। उसने पैरों में चप्पल भी नहीं पहनी। जून का महीना था। धरती तवे की तरह तप रही थीं, पर दिनेश को पैरों के जलने की भी चिंता नहीं थीं। वह जहाँ से आवाज़ आई थी, उसी ओर भाग चला।

सामने की क्यारी में भिंडियों के ऊँचे-ऊँचे पौधो थे। एक ओर सीताफल की घनी बेल फैली हुई थी। क्यारियों के चारों ओर हरे-हरे केले के वृक्ष लहरा रहे थे। दिनेश ने जल्दी-जल्दी भिंडियों के पौधों को उलटना-पलटना आरंभ किया, वहाँ कुछ नहीं मिला तो उसने सारी सीताफल की बेल छान मारी।

बराबर में ही घूँस ने गड्ढ़े बना रखे थे। ढूँढते-ढूँढते जब उसकी निगाह उधर गई तो उसने देखा कि गड्ढ़े के ऊपर ही एक बिल्कुल नई चमचमाती किरमिच की गेंद पड़ी है।

दिनेश ने हाथ बढ़ा कर गेंद उठा ली। लगता था जैसे किसी ने उसे आज ही बाज़ार से खरीदा है। उसने उसे उलट-पलटकर देखा परंतु कुछ भी समझ में नहीं आया। नज़र उठाकर उसने पास की तिमंज़िली इमारत की ओर देखा कि हो सकता है किसी बच्चे ने इसे ऊपर से फेंका हो परंतु उस इमारत के इस ओर खुलने वाले सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद थे। छत की मुँडेर से लेकर नीचे तक तेज़ धूप चिलचिला रही थी। फिर कौन खरीद सकता है नई गेंद ? दिनेश ने सुधीर, अनिल, अरविंद, आनंद, दीपक-सभी के नाम मन में दोहराए। यदि गेंद खरीदी भी है तो इस दोपहरी में इसे नीचे कौन फैंकेगा!

हो न हो, यह गेंद बाहर से ही आई है। उसने सड़क पर बने गोल चक्कर के बगीचे की ओर देखा परंतु वहाँ पर केवल दो-चार गायें ही दिखाई पड़ीं जो पेड़ों के नीचे सुस्ता रही थीं। उसे ध्यान आया कि जाने कितनी बार अपने मोहल्ले के बच्चों की गेंदें किक्रेट खेलते हुए दूर चली गई और फिर कभी नहीं मिलीं। एक बार तो एक गेंद एक चलते हुए ट्रक में भी जा पड़ी थी।

तभी भीतर से माँ की आवाज़ आई, "अरे दिनेश, तू सुनेगा नहीं ? सब अपने-अपने घरों में सो रहे हैं और तू धूप में घूम रहा है।"

दिनेश गेंद को हाथ में लिए हुए भीतर आ गया। ठंडे फर्श पर बिछी चटाई पर वह लेट गया और सोचने लगा- भले ही यह गेंद मोहल्ले में से किसी की न हो, परंतु ईमानदारी इसी में है कि एक बार सबसे पूछ लिया जाए। गर्मी की छुट्टियाँ थीं। बच्चों ने खेलने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एक क्लब बनाया हुआ था उस क्लब में सभी बच्चों के लिए बल्ले थे और गेंद खरीदने के लिए वे आपस में क्लब का चंदा देकर पैसे इकठा कर लेते थे।

शाम को सारे बच्चे इकट्ठा हुए। दिनेश ने सभी से पूछा, "मुझे एक गेंद मिली है। अगर तुम में से किसी की गेंद खो गई हो, तो वह गेंद की पहचान बताकर गेंद मुझसे ले सकता है।"

तभी अनिल बोला, "गेंद तो मेरी खो गई है।"

"कब खोई थी तेरी गेंद?"

"यही कोई चार महीने पहले।"

"तो वह गेंद तेरी नहीं है", दिनेश ने कहा।

"फिर वह मेरी होगी", सुधीर ने तुरंत उस पर अपना अधिकार जताते हुए कहा।

"वह कैसे", दिनेश ने पूछा।

"तू मुझे गेंद दिखा दे, मैं अपनी निशानी बता दूँगा।"

"वाह! यह कैसे हो सकता है?" दिनेश बोला, "गेंद देखकर निशानी बताना कौन-सा कठिन है! बिना देखे बता, तब जानू।"

तभी ऊपर से दीपक उतर आया। दीपक अपना मतलब सिद्ध करने तथा अवसर पड़ने पर सभी को मित्र बना लेने में चतुर था। गेंद की बात सुनकर दीपक बोला, "गेंद मेरी है।"

"कैसे तेरी है?" सभी ने एक साथ पूछा, "कल ही तो तू कह रहा था कि इस बार तेरे पापा तुझे गेंद लाने के लिए पैसे नहीं दे रहे हैं।"

"मेरी गेंद तो पाँच महीने पहले खोई थी", दीपक ने कहा, "जब बड़े भैया की शादी हुई थी न, तभी सुनील ने मेरी गेंद छत पर से नीचे फैंक दी थी।" दिनेश अच्छी तरह जानता था कि यह गेंद दीपक की नहीं है। दीपक की गेंद पाँच महीने पहले खोई थी। और यह कभी हो ही नहीं सकता कि गेंद पाँच-छह महीने पड़ी रहे और उस पर मिटी का एक भी दाग न लगे।

दीपक ने कहा, "मैं कुछ नहीं जानता। गेंद मेरी है। वह मेरी है और सिर्फ मेरी है।"

"अरे, जा जा, बड़ा आया गेंदवाला! क्या सबूत है कि यही गेंद नीचे फैंकी थी", अनिल ने पूछा।

दीपक ने कहा, "हाँ, सबूत है। मुझे गेंद दिखा दो, मैं फौरन बता दूँगा"

दिनेश ने देखा कि झगड़ा बढ़ रहा है। गेंद हथियाने के लिए दीपक सुधीर और सुनील का सहारा ले रहा है।

वह जानता था कि यदि गेंद दीपक के पास चली गई तो ये तीनों मिलकर खेलेंगे।

"अच्छा मैं गेंद ला रहा हूँ। परंतु जब तक पक्का सबूत नहीं मिलेगा, मैं किसी को दूँगा नहीं", दिनेश ने कहा।

गेंद आ गई। दीपक उसे देखते ही बोला, "यह मेरी है, यही है मेरी गेंद। यह लाल रंग का निशान मेरी ही गेंद पर था।"

"वाह! सभी गेंदों पर ऐसे ही निशान होते हैं", अनिल ने दिनेश का साथ देते हुए कहा।

दीपक ने फिर ज़ोर लगाया, "मैं अपने पापा से कहलवा सकता हूँ कि गेंद मेरी है।"

"अरे जा, ऐसे तो मैं अपने बड़े भाई से कहलवा सकता हूँ कि गेंद दिनेश की है!" अनिल ने कहा।

"कुछ भी हो गेंद मेरी है", दीपक ने उसे धरती पर मारते हुए कहा "धरती पर टप्पा पड़ते हुए मेरी गेंद में से ऐसी ही आवाज़ आती थी।"

"मेरे साथ बाज़ार चल दुकानों पर जितनी गेंदें हैं, सभी के टप्पे की आवाज़ ऐसी ही होगी", अनिल ने फिर उसकी बात काट दी।

"अच्छी बात है, तो मैं इसे सड़क पर फेंक दूँगा। देखूँ कैसे कोई खेलेगा!" दीपक ने जैसे ही गेंद को सड़क पर फेंकने के लिए हाथ उठाया कि अनिल और दिनेश ने उसे पकड़ लिया। अब दीपक ने रुआँसे होते हुए अपना अंतिम हथियार आज़माया बोला, "या तो गेंद मुझे दे दो, नहीं तो मैं इसके पैसे सुनील से लूँगा।"

अब तो सुनील, दीपक और सुधीर का गुट मज़बूत होने लगा था। तीनों का ही कहना था कि गेंद दीपक की है और उसे ही मिलनी चाहिए।

दिनेश तब तक चुप था। वास्तव में दिनेश का मन उस समय सबके साथ मिलकर उस गेंद से खेलने को कर रहा था। बोला, "अब चुप भी रहो

झगड़ा बाद में कर लेंगे। अपने-अपने बल्ले ले आओ, पहले खेल लें।"

पाँच मिनट के भीतर ही खेल आरंभ हो गया। दिनेश बल्लेबाजी कर रहा था। अभी दो-चार बार ही खेला था कि वह चमकदार नई गेंद एकदम ज़ोर से उछली और दरवाज़ा पार कर सड़क पर जाते हुए एक स्कूटर में बनी सामान रखने की जालीदार टोकरी में जा गिरी। स्कूटर वाले को शायद पता भी नहीं चला। तेज़ी से चलते हुए स्कूटर के साथ गेंद भी चली गई। बच्चे पहले तो चिल्लाते हुए स्कूटर के पीछे भागे, परंतु जल्दी ही सब रुक गए। वे समझ गए थे कि स्कूटर के पीछे भागना बेकार है। एक पल के लिए सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर सभी ठहाका मार कर हँस पड़े।

शांताकुमारी जैन

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(क) दिनेश किसकी आवाज़ सुनकर बगीचे में गया ?

(ख) बगीचे में दिनेश को क्या मिला ?

(ग) गेंद को लेकर बच्चों में झगड़ा क्यों होने लगा ?

(घ) दीपक ने गेंद को अपना बताने के लिए क्या-क्या झूठ बोले ?

(ङ) अंत में गेंद का क्या हुआ ?

2. किसने कहा, किससे कहा और क्यों कहा ?

(क) "अरे! अरे! बेटा कहाँ जा रहा है ? बाहर लू चल रही है।"

(ख) तु मुझे गेंद दिखा दे, मैं अपनी निशानी बता दूँगा।

(ग) अच्छी बात है, तो मैं इसे सड़क पर फैंक दूंगा।

(घ) "अपने - अपने बल्ले ले आओ पहले खेल लें।"

3. पहचान

मान लो तुम्हारा कोई खिलौना घर में ही कहीं खो गया है। तुमने अपने साथियों को घर में ही कहीं खो दिया हो। तुमने अपने साथियों को घर पर बुलाया है ताकि सब मिलकर उसे खोज लें।

तुम अपने खिलौने की पहचान के लिए अपने साथियों को कौन-कौन सी बातें बताओगे ? लिखो।

.....

.....

.....

.....

4. देखो और बताओ कि कौन – कौन सी सब्ज़ी बेल और पौधे पर लगती है ?

सीतफल	भिंडी	तोरी	मिर्ची
मटर	घिया	बैंगन	नींबू
तरबूज	टमाटर	पालक	बीन्स

बेल	पौधे
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

तरह तरह की गेंद

गेंद के अनेक रंग-रूप होते हैं। अलग-अलग खेतों में अलग-अलग प्रकार की गेंदों का इस्तेमाल किया जाता है। नीचे दी गई जगह में खेलों के अनुसार गेंदों की सूची बनाओ।

क्रिकेट	किरमिच
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

खोजो आस-पास

दिनेश चिक सरकाकर बरामदे की ओर भागा।

(क) चिक पर्दे का काम करती है पर चिक और पर्दे में फर्क होता है। इन दोनों में क्या अंतर है ? समूह में चर्चा करो। इसी तरह पता लगाओं कि इन शब्दों मे क्या अंतर है ?

टहनी-तना	पेड़-पौधा
घूँस-चूहा	मुँडेर-चारदीवारी

(ख) चिक सरकंडे से भी बनती है और तीलियों से भी। सरकंडे से और क्या-क्या बनता है ? अपने आसपास पता करो और लिखो।

क्लब बनाएँ

मान लो तुम्हे अपने स्कूल में एक क्लब बनाना है जो स्कूल में खेल-कूद के कार्यक्रमों की तैयारी करेगा।

- इस क्लब में शामिल होने और इसको चलाने आदि के बारे में नियम सोचकर लिखो।
- तुम्हारे विचार से इस क्लब को अच्छी तरह चलाने के नियमों की ज़रूरत है या नहीं ? अपने जवाब का कारण भी बताओ।

एक, दो, तीन

दिनेश ने तिमंज़िली इमारत की ओर देखा।

जिस इमारत में तीन मंज़िलें हो, उसे मिमंज़िली इमारत कहते हैं।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

जिस मकान में दो मंज़िले हो .....

जिस स्कूटर में दो पहिये हों .....

जिस झंडे में तीन रंग हो .....

जिस जगह पर चार राहें मिलती हो .....

जिस स्कूटर में तीन पहिये हो .....

सब्जी एक नाम अनेक

एक ही सब्जी या फल के नाम अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग होतें हैं। नीचे ऐसे ही कुछ नाम दिए गए हैं।

सीताफल	कांदा	बटाटा	अमरूद
तोरी	शरीफा	काशीफल	बैंगन
नेनुआ	तरबूज	कुम्हाड़ा	घीया

– बताओ कि तुम्हारे घर, शहर या कस्बे में इनमें से कौन-कौन से शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं?

– बाकी नामों का इस्तेमाल किन-किन स्थानों पर होता है ? पता करो।

6. श्रुतलेख :-

1. किरमिच 2. ढूँढते 3. तिमंजिली
4. चिलचिला 5. मौहल्ले 6. खरीदना
7. निशानी 8. हथियाना

7. शब्दार्थ :-

चिक – बाँस से बनाया गया परदा
लू – ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली गर्म हवा
बेल – लता
वृक्ष – पेड़
चतुर – होशियार
सुविधा – सहलत, सुगमता
सबूत – प्रमाण

वास्तव	–	असलियत
आज़माना	–	परखना
गुट	–	दल
अक्लमंद	–	बुद्धिमान
बुद्धू	–	बेवकूफ
खिलाफ़	–	विरूद्ध
सत्याग्रह	–	अंहिसात्मक आंदोलन
मनाही	–	मना
हिम्मत	–	साहस
अधिकार	–	हक़
खोना	–	गुम होना
सहारा	–	मदद (कहानी के आधार पर)

किरमिच की गेंद

शांता कुमारी जैन द्वारा रचित "किरमिच की गेंद" कहानी में बच्चों की भावनाओं को रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कहानी हमें यह शिक्षा देती है कि हमें अकारण आपसे में लड़ने के एक दूसरे से मिलकर रहना चाहिए। कहानी यह भी सिखाती है कि हमें कभी भी किसी से झूठ नहीं बोलना चाहिए क्योंकि एक तो झूठ की आयु लंबी नहीं होती और न ही झूठे व्यक्ति को कभी सम्मान प्राप्त होता है।

10 सीलवा हाथी और लोभी मित्र

G7H5N9

हिमालय	वन	हाथी	चमकीला	कांतिमय
विलाप	गज	शालीनता	उपक्रम	खतरनाक
निर्जन	निवारण	भोजन	सहायता	शेष
सहर्ष	याचना	मसूड़े	लथपथ	तृष्णा

कभी हिमालय के घने वनों में सीलवा नामक एक हाथी रहता था। उसका शरीर चाँदी की तरह चमकीला और सफेद था। उसकी आंखें हीरे की तरह चमकदार थीं। उसकी सूँड सुहागा लगे सोने के समान कांतिमय थी। उसके चारों पैर तो मानो लाख के बने हुए थे। वह अस्सी हज़ार गजों का राजा भी था।

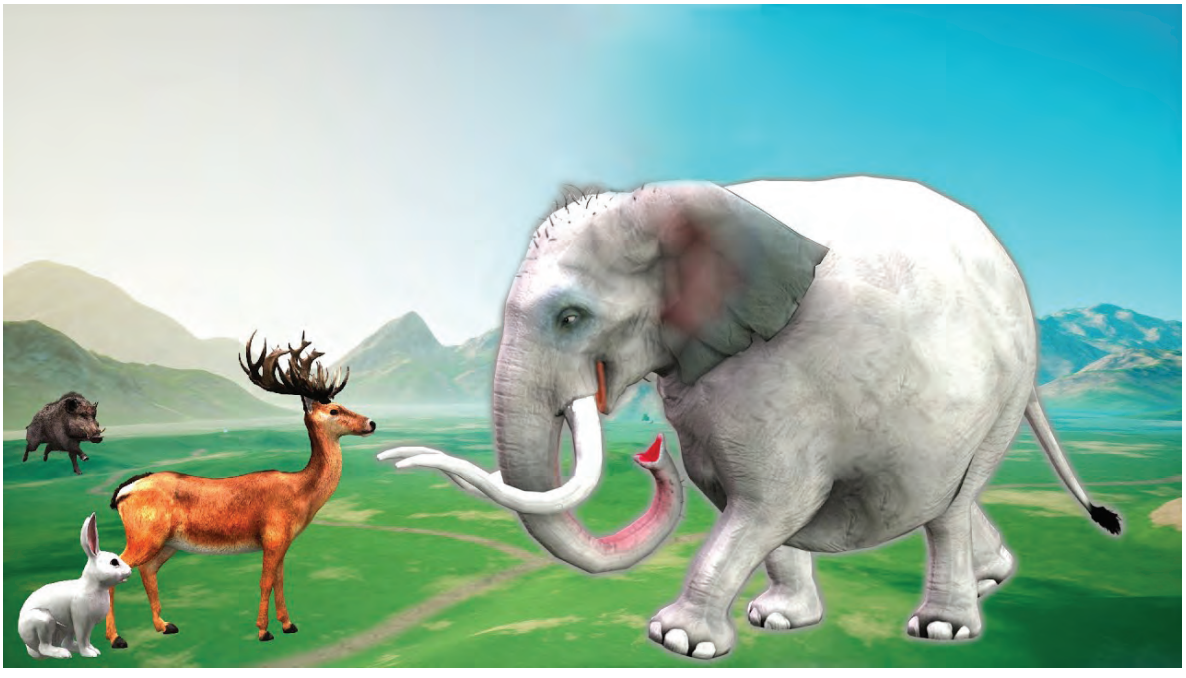

वन में विचरण करते हुए एक दिन सीलवा ने एक व्यक्ति को विलाप करते हुए देखा। उसकी भंगिमाओं से स्पष्ट था कि वह उस निर्जन वन में अपना मार्ग भूल बैठा था। सीलवा को उस व्यक्ति की दशा पर दया आई। वह उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ा, मगर व्यक्ति ने समझा कि हाथी उसे मारने आ रहा है अत: वह दौड़ कर भागने लगा। उसके भय को दूर करने के उद्देश्य से सीलवा बड़ी शालीनता से अपने स्थान पर खड़ा हो गया। जिससे भागता आदमी भी थम गया।

सीलवा ने ज्यों ही अपना पैर फिर आगे बढ़ाया, वह आदमी फिर भाग खड़ा हुआ और जैसे ही सीलवा ने अपने पैरों को रोका, वह आदमी भी रुक गया। तीन बार जब सीलवा ने अपने उपक्रम को वैसे ही दोहराया तो भागते आदमी का भय भी भाग गया। वह समझ गया कि सीलवा कोई खतरनाक हाथी नहीं है। तब वह आदमी निर्भीक होकर अपने स्थान पर स्थिर हो गया। सीलवा ने तब उसके पास पहुंच कर उसकी सहायता का प्रस्ताव रखा। आदमी ने तत्काल उसके प्रस्ताव को स्वीकार किया। सीलवा ने उसे तब अपनी सूंड पर उठाकर पीठ पर बैठा लिया और अपने निवास स्थान पर ले जाकर नाना प्रकार के फलों से उसकी आवभगत की। अंतत: जब उस आदमी की भूख प्यास का निवारण हो गया तो सीलवा ने उसे पुन: अपनी पीठ पर बिठाकर उस निर्जन वन के बाहर उसकी बस्ती के करीब लाकर छोड़ दिया।

वह आदमी लोभी और कृतघ्न था। तत्काल ही वह एक शहर के बाज़ार में एक बड़े व्यापारी से हाथी दांत का सौदा कर आया। कुछ ही दिनों में वह आरी आदि औज़ार और रास्ते के लिए समुचित भोजन का प्रबंध कर सीलवा के निवास स्थान को प्रस्थान कर गया।

जब वह व्यक्ति सीलवा के सामने पहुंचा तो सीलवा ने उससे उसके पुनरागमन का कारण पूछा। उस व्यक्ति ने तब अपनी निर्धनता दूर करने के लिए उसके दांतो की याचना की। उस दिन सीलवा दान पारमी होने की साधना कर रहा था। अतः उसने उस आदमी की याचना को सहर्ष स्वीकार कर लिया तथा उसकी सहायता के लिए घुटनों पर बैठ गया ताकि वह उसके दाँत काट सके।

उस व्यक्ति ने शहर लौटकर सीलवा के दाँतो को बेचा और उनकी भरपूर कीमत भी पाई। मगर प्राप्त धन से उसकी तृष्णा और भी बलवती हो गई। वह महीने भर में फिर सीलवा के पास पहुंचकर उसके शेष दाँतो की याचना कर बैठा। सीलवा ने उसे पुनः अनुगृहीत किया।

कुछ ही दिनों के बाद वह लोभी फिर से सीलवा के पास पहुँचा और उसके शेष दांतों को भी निकाल कर ले जाने की इच्छा जताई। दान परायण सीलवा ने उस व्यक्ति की इस याचना को भी सहर्ष स्वीकार कर लिया। फिर क्या था? क्षण भर में वह आदमी सीलवा के मसूड़ों को काट-छेद कर उसके सारे दाँत समूल निकाल कर और अपने गंतव्य को तत्काल प्रस्थान कर गया।

खून से लथपथ दर्द से व्याकुल सीलवा जीवित न रह सका और दम तोड़ गया। लौटता लोभी जब वन की सीमा भी नहीं पार कर पाया था, तभी धरती अचानक फट गई और वह आदमी काल के गाल में समा गया।

तभी वहां वास करती हुई एक वृक्ष यक्षिणी ने यह गाना गाया,

"मांगती है तृष्णा और .... और.....!

मिटा नहीं सकता जिसकी भूख को सारा संसार ....."

अभ्यास

1. बताएं और लिखें :-

क) सीलवा के सौंदर्य का वर्णन कीजिए ?

ख) वन में भटका व्यक्ति सीलवा से क्यों डर रहा था ?

ग) वह आदमी किस प्रकृति का था ?

घ) सीलवा ने आदमी की किस याचना को स्वीकार किया ?

ङ) सीलवा की मृत्यु कैसे हुई ?

2. विलोम शब्द :-

निर्भीक	भयभीत	लोभी	त्यागी
कृतघ्न	.....	समूल	.....
समुचित	.....	यक्षिणी	.....
प्रस्थान	.....	हर्ष	.....

3. वाक्य बनाएं :-

जैसे :- गले का हार - श्रवण कुमार अपने माता पिता के गले का हार था।

विलाप करना

.....

भीगी बिल्ली बनना

.....

अपना उल्लू सीधा करना

.....

4. योग्यता विस्तार :-

लोभी व्यक्ति पर कोई अन्य कहानी पढ़ें। दानवीर कर्ण के आधार पर कविता "कहानी कर्ण की" पढ़ें और उसकी दानवीरता का वर्णन करें।

5. प्रत्यास्मरण :-

(क) सीलवा का शरीर कैसा था ?

(ख) वन में भटके व्यक्ति को सीलवा ने क्या प्रस्ताव दिया ?

(ग) भागता हुआ आदमी निर्भय कैसे हुआ ?

(घ) सीलवा ने व्यक्ति को पीठ पर कैसे बिठाया ?

(ङ) वह आदमी दोबारा सीलवा के पास क्यों गया ?

6. स्तंभ क, ख और ग में दिए गए वाक्यांशों से सार्थक वाक्य बनाकर लिखें।

क	ख	ग
सीलवा	खतरनाक हाथी ने वन में भटके व्यक्ति को दान पारमी होने की खून से लथपथ दर्द से व्याकुल को उस व्यक्ति पर	साधना कर रहा था। जीवित न रह पाया। बहुत दया आई नहीं था। रोते हुए देखा

7. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरें।

यक्षिणी, दाँतो, दर्द, चाँदी, विलाप, दम

(क) सीलवा का शरीर ..... की तरह चमकीला और सफ़ेद था।

(ख) वन में विचरण करते हुए एक दिन सीलवा ने एक व्यक्ति को ..... करते हुए देखा।

(ग) उस व्यक्ति ने शहर लौटकर सीलवा के ..... को बेचा और उनकी भरपूर कीमत पाई।

(घ) खून से लथपथ ..... से व्याकुल सीलवा जीवित न रह सका। और उसने ..... तोड़ दिया।

(ङ) तभी वहां वास करती हुई एक वृक्ष ..... ने यह गाना गाया।

8. श्रुतलेख :-

सूँड,	कांतिमय,	विचरण,	विलाप,	भंगिमाओं,
निर्जन	उपक्रम	निर्भीक	प्रस्ताव	कृतघ्न
पुनरागमन	सहर्ष	अनुगृहित	गंतव्य	तत्काल
प्रस्थान	व्याकुल	यक्षिणी	तृष्णा	

9. शब्दार्थ :-

कांतिमय – चमकदार

विलाप – बिलख-बिलख कर रोना

निर्जन	–	एंकात
गज	–	हाथी
निर्धनता	–	गरीबी
जनमानस	–	लोग
याचना	–	प्रार्थना
वन	–	जंगल
काल	–	मृत्यु
तत्काल	–	तुरंत
भूमि	–	धरती
पुनरागमन	–	दोबारा आना

सीलवा हाथी और लोभी मित्र

"सीलवा हाथी और लोभी मित्र" एक जातक कथा है। इस कहानी में ऐसे लोभी और कृतघ्न व्यक्ति का वर्णन किया गया है जिसकी लालच के कारण सीलवा नाम के हाथी की जान चली जाती है। कहानी में दर्शाया गया है कि अधिकतर मनुष्य स्वभाव से लालची और जानवर वफ़ादार प्रकृति के होते हैं। कहानी में सीलवा हाथी मित्रता का कर्त्तव्य निभाते हुए कृतघ्न मित्र के लोभ की भेंट चढ़ जाता है।

11 दान की हिसाब नीति

X7L3P5

एक था राजा। राजा जी लकदक कपड़े पहनकर यूं तो हज़ारों रुपए खर्च करते रहते थे, पर दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

राजसभा में एक से एक नामी लोग आते रहते थे, लेकिन गरीब, दुखी, विद्वान, सज्जन इनमें से कोई भी नहीं आता था क्योंकि वहाँ पर इनका बिल्कुल सत्कार नहीं होता था।

एक बार उस देश में अकाल पड़ गया। पूर्वी सीमा के लोग भूखे-प्यासे मरने लगे। राजा के पास खबर आई। वे बोले, "यह तो भगवान की मार है, इसमें मेरा कोई हाथ नहीं है।"

लोगों ने कहा, "महाराज, राजभंडार से हमारी सहायता करने की कृपा करें, जिससे हम लोग दूसरे देशों से अनाज खरीदकर अपनी जान बचा सकें।"

राजा ने कहा, "आज तुम लोग अकाल से पीड़ित हो, कल पता चलेगा कहीं भूकंप आया है। परसों सुनूँगा, कहीं के लोग बड़े गरीब हैं, दो वक्त की रोटी नहीं

जुटती। इस तरह सभी की सहायता करते-करते जब राजभंडार खत्म हो जाएगा तब खुद मैं ही दिवालिया हो जाऊँगा।" यह सुनकर सभी निराश होकर लौट गए। इधर अकाल का प्रकोप फैलता ही जा रहा था। न जाने रोज़ कितने ही लोग भूख से मरने लगे। फिर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजसभा में गुहार लगाई, "दुहाई महाराज! आपसे ज़्यादा कुछ नहीं चाहते, सिर्फ दस हज़ार रुपए हमें दे दें तो हम आधा पेट खाकर भी ज़िंदा रह जाएँगे।"

राजा ने कहा, "दस हज़ार रुपए भी क्या तुम्हें बहुत कम लग रहे हैं ? और उतने कष्ट से जीवित रहकर लाभ ही क्या है?"

एक व्यक्ति ने कहा, "भगवान की कृपा से लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो। उसमें से एक-आधा लोटा ले लेने से महाराज का क्या नुकसान हो जाएगा!"

राजा ने कहा, "राजकोष में अधिक धन है तो क्या उसे दोनों हाथों से लुटा दूँ?"

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "महल में प्रतिदिन हज़ारों रुपए इन सुगंधित वस्त्रों, मनोरंजन और महल की सजावट में खर्च होते हैं। यदि इन रुपयों में से ही थोड़ा-सा धन ज़रूरतमंदों को मिल जाए तो उन दुखियों की जान बच जाएगी।"

यह सुनकर राजा को क्रोध आ गया। वह गुस्से से बोला, "खुद भिखारी होकर मुझे उपदेश दे रहे हो ? मेरा रुपया है, मैं चाहे उसे उबालकर खाऊँ चाहे तलकर मेरी मर्ज़ी। तुम अगर इसी तरह बकवास करोगे तो मुश्किल में पड़ जाओगे। इसलिए इसी वक्त तुम चुपचाप खिसक जाओ।"

राजा का क्रोध देखकर लोग वहाँ से चले गए।

राजा हँसते हुए बोला, "छोटा मुँह बड़ी बात! अगर सौ-दो सौ रुपए होते तो एक बार सोच भी सकता था। पहरेदारों की खुराक दो-चार दिन कम कर देता और यह रकम पूरी भी हो जाती। मगर सौ-दो सौ से इन लोगों का पेट नहीं भरेगा, एकदम हज़ार माँग बैठे। छोटे लोगों के कारण नाक में दम हो गया है।"

यह सुनकर वहां उपस्थित लोग हाँ-हूँ कह कर रह गए। मगर मन ही मन उन्होंने भी सोचा, "राजा ने यह ठीक नहीं किया। ज़रूरतमंदों की सहायता करना तो राजा का कर्त्तव्य है।"

दो दिन बाद न जाने कहाँ से एक बूढ़ा सन्यासी राजसभा में आया। उसने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा, "दाता कर्ण महाराज बड़ी दूर से आपकी प्रसिद्धि सुनकर आया हूँ। संन्यासी की इच्छा भी पूरी कर दें।"

अपनी प्रशंसा सुनकर राजा बोला, "ज़रा पता तो चले तुम्हें क्या चाहिए? यदि थोड़ा कम माँगो तो शायद मिल भी जाए।"

सन्यासी ने कहा, "मैं तो सन्यासी हूँ। मैं अधिक धन का क्या करूँगा! मैं राजकोष से बीस दिन तक बहुत मामूली भिक्षा प्रतिदिन लेना चाहता हूँ। मेरा भिक्षा लेने का नियम इस प्रकार है, मैं पहले दिन जो लेता हूँ, दूसरे दिन उसका दुगुना, फिर तीसरे दिन उसका दुगुना, फिर चौथे दिन तीसरे दिन का दुगुना। इसी तरह से प्रतिदिन दुगुना लेता जाता हूँ। भिक्षा लेने का मेरा यही

तरीका है।"

राजा बोला, "तरीका तो समझ गया। मगर पहले दिन कितना लेंगे, यही असली बात है। दो-चार रुपयों से पेट भर जाए तो अच्छी बात है, मगर एकदम से बीस-पचास माँगने लगे, तब तो बीस दिन में काफ़ी बड़ी रकम हो जाएगी।"

सन्यासी ने हँसते हुए कहा, "महाराज, मैं लोभी नहीं हूँ। आज मुझे एक रुपया दीजिए, फिर बीस दिन तक दुगुने करके देते रहने का हुक्म दे दीजिए।"

यह सुनकर राजा, मंत्री और दरबारी सभी की जान में जान आई। राजा ने हुक्म दे दिया कि सन्यासी के कहे अनुसार बीस दिन तक राजकोष से उन्हें भिक्षा दी जाती रहे। सन्यासी राजा की जय-जयकार करते हुए घर लौट गए।

राजा के आदेश के अनुसार राजभंडारी प्रतिदिन हिसाब करके सन्यासी को भिक्षा देने लगा। इस तरह दो दिन बीते, दस दिन बीते। दो सप्ताह तक

भिक्षा देने के बाद भंडारी ने हिसाब करके देखा कि दान में काफ़ी धन निकला जा रहा है। यह देखकर उन्हें उलझन महसूस होने लगी। महाराज तो कभी किसी को इतना दान नहीं देते थे। उसने यह बात मंत्री को बताई।

मंत्री ने कुछ सोचते हुए कहा, "वाकई, यह बात तो पहले ध्यान में ही नहीं आई थी। मगर अब कोई उपाय भी नहीं है। महाराज का हुक्म बदला नहीं जा सकता।"

इसके बाद फिर कुछ दिन बीते। भंडारी फिर हड़बड़ाता हुआ मंत्री के पास पूरा हिसाब लेकर आ गया। हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

वह अपना पसीना पोंछकर, सिर खुजलाकर, दाढ़ी में हाथ फेरते हुए बोला, "यह क्या कह रहे हो!" अभी से इतना धन चला गया है! तो फिर बीस दिनों के अंत में कितने रुपए होंगे ?

भंडारी बोला, "जी, पूरा हिसाब तो नहीं किया है।"

मंत्री ने कहा, "तो तुरंत बैठकर, अभी पूरा हिसाब करो।"

भंड़ारी हिसाब करने बैठ गया। मंत्री महाशय अपने माथे पर बर्फ़ की पट्टी लगाकर तेज़ी से पंखा झलवाने लगे।

कुछ ही देर में भंडारी ने पूरा हिसाब कर लिया।

मंत्री ने पूछा, "कुल मिलाकर कितना हुआ ?"

भंडारी ने हाथ जोड़कर कहा, "जी, दस लाख अड़तालीस हज़ार पाँच सौ पिचहत्तर रुपए।"

मंत्री गुस्से में बोला, "मज़ाक कर रहे हो ?" यदि सन्यासी को इतने रुपए दे दिए तब तो राजकोष खाली हो जाएगा।"

भंडारी ने कहा, "मज़ाक क्यों करूँगा? आप ही हिसाब देख लीजिए।"

यह कहकर उसने हिसाब का कागज़ मंत्री जी को दे दिया। हिसाब देखकर मंत्री जी को चक्कर आ गया। सभी उन्हें सँभालकर बड़ी मुश्किलों से राजा के पास ले गए।

राजा ने पूछा, "क्या बात है ?"

मंत्री बोले, "महाराज, राजकोष खाली होने जा रहा है।"

राजा ने पूछा, "वह कैसे?"

मंत्री बोले, "महाराज, सन्यासी को आपने भिक्षा देने का हुक्म दिया है। मगर अब पता चला है कि उन्होंने इस तरह राजकोष से करीब दस लाख रुपए झटकने का उपाय कर लिया है।"

दान का हिसाब

पहला दिन	1 रुपया
दूसरा दिन	2 रुपए
तीसरा दिन	4 रुपए
चौथा दिन	8 रुपए
पाँचवाँ दिन	16 रुपए
छठा दिन	32 रुपए
सातवाँ दिन	64 रुपए
आठवाँ दिन	128 रुपए
नवाँ दिन	256 रुपए
दसवाँ दिन	512 रुपए
ग्यारहवाँ दिन	1024 रुपए
बारहवाँ दिन	2048 रुपए
तेरहवाँ दिन	4096 रुपए
चौदहवाँ दिन	8192 रुपए
पद्रंहवाँ दिन	16384 रुपए
सोलहवाँ दिन	32768 रुपए
सत्रहवाँ दिन	65536 रुपए
अठारहवाँ दिन	131072 रुपए
उन्नीसवाँ दिन	262144 रुपए
बीसवाँ दिन	524288 रुपए
कुल	1048575 रुपए

राजा ने गुस्से से कहा, "मैंने इतने रुपये देने का आदेश तो नहीं दिया था। फिर इतने रुपए क्यों दिए जा रहे हैं ? भंडारी को बुलाओ।" मंत्री ने कहा, "जी सब कुछ आपके हुक्म के अनुसार ही हुआ है। आप खुद ही दान का हिसाब देख लीजिए।"

राजा ने उसे एक बार देखा, दो बार देखा, इसके बाद वह बेहोश हो गया। कफी कोशिशों के बाद उनके होश में आ जाने पर लोग सन्यासी को बुलाने दौड़े।

सन्यासी के आते ही राजा रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा। बोला, "दुहाई है सन्यासी महाराज, मुझे इस तरह जान-माल से मत मारिए। जैसे भी हो एक समझौता करके मुझे वचन से मुक्त कर

दीजिए। अगर आपको बीस दिन तक भिक्षा दी गई तो राजकोष खाली हो जाएगा। फिर राज–काज कैसे चलेगा।"

सन्यासी ने गंभीर होकर कहा, "इस राज्य में लोग अकाल से मर रहे हैं। मुझे उनके लिए केवल पचास हज़ार रुपए चाहिए। वह रुपया मिलते ही मैं समझूँगा मुझे मेरी पूरी भिक्षा मिल गई है।"

राजा ने कहा, "परंतु उस दिन एक आदमी ने मुझसे कहा था कि लोगों के लिए दस हज़ार रुपए ही बहुत होंगे।"

सन्यासी ने कहा, "मगर आज मैं कहता हूँ कि पचास हज़ार से एक पैसा कम नहीं लूँगा।"

राजा गिड़गिड़ाया, मंत्री गिड़गिड़ाए, सभी गिड़गिड़ाए मगर सन्यासी अपने वचन पर डटा रहा। आखिरकार लाचार होकर राजकोष से पचास हज़ार रुपए सन्यासी को देने के बाद ही राजा की जान बची।

पूरे देश में खबर फैल गई कि अकाल के कारण राजकोष से पचास हज़ार रुपए राहत में दिए गए हैं। सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(क) राजा किसी को भी दान क्यों नहीं देना चाहता था ?

(ख) राजदरबार के लोग मन ही मन राजा को बुरा कहते थे लेकिन वे राजा का विरोध क्यों नहीं कर पाते थे ?

(ग) राजसभा में सज्जन और विद्वान लोग क्यों नहीं जाते थे ?

(घ) सन्यासी ने सीधे-सीधे शब्दों में भिक्षा क्यों नहीं माँग ली ?

(ङ) राजा को संन्यासी के आगे गिड़गिड़ाने की ज़रूरत क्यों पड़ी ?

2. **अंदाज़ अपना-अपना**

तुम नीचे दिए गए वाक्यों को किस तरह से कहोगे ?

(क) दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

(ख) हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

(ग) सन्यासी की बात सुनकर सभी की जान में जान आई।

(घ) लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो।

3. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

सन्यासी, क्रोध, अकाल, धन, हाथों, राजभंडार

(क) एक बार उस देश में ..... पड़ गया।

(ख) महाराज, ... से हमारी सहायता करें।

(ग) राजकोष में अधिक ..... है तो क्या उसे दोनों .... से लूटा दूँ।

(घ) सह सुनकर राजा को ..... आ गया।

(ङ) एक बूढ़ा ..... राजसभा में आया।

4. 'कर्ण' के अतिरिक्त किसी अन्य दानवीर की कहानी का शिक्षक कक्षा में वर्णन करें। जैसे :- भामाशाह, राजा हरीशचंद्र, महायोगी दधीचि।

5. साथी हाथ बढ़ाना

कभी-कभी कुछ इलाकों में बारिश बिल्कुल भी नहीं होती। नदी-नाले, तालाब, सब सूख जाते हैं फसलों के लिए पानी नहीं मिलता। खेत सूख जाते हैं। पशु-पक्षी, मानव आदि लोग भूखे मरने लगते हैं। ऐसे समय में वहाँ रहने वाले लोगों को मदद की ज़रूरत होती है। तुम भी लोगों की मदद ज़रूर कर सकते हो। सोचकर बताओ तुम अकाल में परेशान लोगों की मदद कैसे करोगे ?

ज़िम्मेदारी अपनी-अपनी

तुम्हारे विचार से राजदरबार में किसकी क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ होगीं ?

(क) मंत्री

(ख) भंडारी

6. कर्ण जैसा दानी

सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

पता करो कि –

(क) कर्ण कौन थे ?

(ख) कर्ण जैसे दानी का क्या मतलब है ?

(ग) दान क्या होता है ?

(घ) किन-किन कारणों से लोग दान करते हैं ?

7. कहानी और तुम

(क) राजा राजकोष के धन का उपयोग किन-किन कामों में करता था ?

– तुम्हारे घर में जो पैसा आता है वह कहाँ-कहाँ खर्च होता है ? पता करके लिखो।

(ख) अकाल के समय लोग राजा से कौन-कौन से काम करवाना चाहते थे ?

– तुम अपने स्कूल या इलाके में क्या-क्या काम करवाना चाहते हो ?

8. कैसा राजा

(क) राजा किसी को दान देना पसंद नहीं करता था।

तुम्हारे विचार से राजा सही था या गलत ?

अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

(ख) राजा दान देने के अलावा और किन-किन तरीकों से लोगों की सहायता कर सकता था ?

9. पूर्व और पूर्व

पूर्वी सीमा के लोग भूखे प्यासे मरने लगे।

(क) 'पूर्व' शब्द के दो अर्थ हैं

पूर्व-एक दिशा

पूर्व-पहले।

नीचे ऐसे ही कुछ और शब्द दिए गए हैं जिनके दो-दो अर्थ हैं। इनका प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाओ।

जल .....

मन .....

मगर .....

(ख) नीचे चार दिशाओं के नाम लिखे हैं।

तुम्हारे घर और स्कूल के आसपास इन दिशाओं में क्या-क्या है ? तालिका भरो -

दिशा	घर के पास	स्कूल के पास
पूर्व		
पश्चिम		
उत्तर		
दक्षिण		

10. शब्दार्थ :-

लकदक	–	महँगे, भड़कीले
नामी	–	प्रसिद्ध, नामवाला, मशहूर
विद्वान	–	ज्ञानी, जाननेवाला
कष्ट	–	दुख
सज्जन	–	भला व्यक्ति
मर्ज़ी	–	इच्छा
अकाल	–	सूखा
ज़रूरतमंद	–	जिसे आवश्यकता हो, निर्धन, गरीब
दिवालिया	–	कंगाल, अचानक गरीब होना
प्रकोप	–	किसी बीमारी का और अधिक तेज़ होना
वाकई	–	सचमुच
गुहार	–	रक्षा के लिए पुकार
खुराक	–	भोजन, आहार
राजकोष	–	सरकारी खज़ाना
हुक्म	–	आदेश

दान की हिसाब नीति

दान की हिसाब नीति बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली शिक्षात्मक कहानी है। यह पाठ विद्यार्थियों को न केवल लालच का अर्थ समझाता है बल्कि उसके परिणाम से भी अवगत करवाता है। प्रस्तुत कहानी ऐसे राजा की कहानी है जो बहुत कंजूस था लेकिन एक सन्यासी अपनी चतुराई से उसे पचास हज़ार रूपए दान देने के लिए बाध्य कर देता है। इस कहानी से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि हमें दूसरों के प्रति दया और परोपकार का भाव बनाए रखना चाहिए।

12 स्वतंत्रता की ओर

धनी को पता था कि आश्रम में कोई बड़ी योजना बन रही है, पर उसे कोई कुछ न बताता। ह्वे सब समझते हैं कि मैं नौ साल का हूँ इसलिए मैं बुद्धू हूँ। पर मैं बुद्धू नहीं हूँ। धनी मन ही मन बड़बड़ाया।

धनी और उसके माता-पिता, बड़ी खास जगह रहते थे- अहमदाबाद के पास, महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में। जहाँ पूरे भारत से लोग रहने आते थे। गांधी जी की तरह वे सब भी भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। जब वे आश्रम में ठहरते तो चरखों पर खादी का सूत कातते, भजन गाते और गांधी जी की बातें सुनते।

साबरमती में सबको कोई न कोई काम करना होता-खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना, कुएँ से पानी लाना, गाय और बकरियों का दूध दुहना और सब्ज़ी उगाना। धनी का काम था बिन्नी की देखभाल करना। बिन्नी, आश्रम की

एक बकरी थी। धनी को अपना काम पसंद था क्योंकि बिन्नी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी। धनी को उससे बातें करना अच्छा लगता था।

उस दिन सुबह, धनी बिन्नी को हरी घास खिला कर, उसके बर्तन में पानी डालते हुए बोला, "कोई बात ज़रूर है बिन्नी वे सब गांधी जी के कमरे में बैठकर बातें करते हैं। कोई योजना बनाई जा रही है। मैं सब समझता हूँ।" बिन्नी ने घास चबाते हुए सिर हिलाया, जैसे कि वह धनी की बात समझ रही हो। धनी को भूख लगी। कूदती-फाँदती बिन्नी को लेकर वह रसोईघर की तरफ़ चला। उसकी माँ चूल्हा फूँक रही थीं और कमरे में धुआँ भर रहा था।

"अम्मा, क्या गांधी जी कहीं जा रहे हैं ?" उसने पूछा।

खाँसते हुए माँ बोलीं, "वे सब यात्रा पर जा रहे हैं।"

"यात्रा? कहाँ जा रहे हैं ?" धनी ने सवाल किया।

"समुद्र के पास कहीं। अब सवाल पूछना बंद करो और जाओ यहाँ से धनी" अम्मा ज़रा गुस्से से बोलीं, "पहले मुझे खाना पकाने दो।"

धनी सब्ज़ी की क्यारियों की तरफ़ निकल गया जहाँ बूढ़ा बिंदा आलू

खोद रहा था। "बिंदा चाचा," धनी उनके पास बैठ गया, "आप भी यात्रा पर जा रहे हैं क्या?" बिंदा ने सिर हिलाकर मना किया। उसके कुछ बोलने से पहले धनी ने उतावले होकर पूछा, "कौन जा रहे हैं ? कहाँ जा रहे हैं ? क्या हो रहा है?"

बिंदा ने खोदना रोक दिया और कहा, "तुम्हारे सब सवालों के जवाब दूँगा पर पहले इस बकरी को बाँधो! मेरा सारा पालक चबा रही है!"

धनी बिन्नी को खींच कर ले गया और पास के नींबू के पेड़ से बाँध दिया। फिर बिंदा ने उसे यात्रा के बारे में बताया। गांधी जी और उनके कुछ साथी गुजरात में पैदल चलते हुए, दांडी नाम की जगह पर समुद्र के पास पहुँचेंगे। गाँवों और शहरों से होते हुए पूरा महीना चलेंगे। दाँडी पहुँच कर वे नमक बनाएँगे।

"नमक?" धनी चौंक कर उठ बैठा, "नमक क्यों बनाएँगे? वह तो किसी भी दुकान से खरीदा जा सकता है।" "हाँ, मुझे मालूम है।" बिंदा हँसा, "पर महात्मा जी की एक योजना है। यह तो तुम्हें पता ही है कि वह किसी बात के विरोध में ही यात्रा करते हैं या जुलूस निकालते हैं, है न?" "हाँ,

बिल्कुल सही। मैं जानता हूँ। वे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सत्याग्रह के जुलूस निकालते हैं जिससे कि उनके खिलाफ़ लड़ सकें और भारत स्वतंत्र हो जाए। पर नमक को लेकर विरोध क्यों कर रहे हैं ? "यह तो समझदारी वाली बात नहीं है।"

"बिल्कुल, धनी क्या तुम्हें पता है कि हमें नमक पर 'कर' देना पड़ता है?"

"अच्छा।" धनी हैरान रह गया।

"नमक की ज़रूरत सभी को है... इसका मतलब है कि हर भारतवासी गरीब से गरीब भी, यह कर देता है," बिंदा चाचा ने आगे समझाया।

"लेकिन यह तो सरासर अन्याय है!" धनी की आँखों में गुस्सा था।

"हाँ, यह अन्याय है। इतना ही नहीं, भारतीय लोगों को नमक बनाने की मनाही है। महात्मा जी ने ब्रिटिश सरकार को कर हटाने को कहा पर उन्होंने यह बात ठुकरा दी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया है कि वे दांडी चल कर जाएँगे और समुद्र के पानी से नमक बनाएँगे।"

"एक महीने तक पैदल चलेंगे!" धनी सोच कर परेशान हो रहा था। "गांधी जी तो थक जाएँगे। वे दांडी बस या ट्रेन से क्यों नहीं जा सकते ?"

"क्योंकि, यदि वे इस लंबी यात्रा पर दांडी तक पैदल जाएँगे तो यह खबर फैलेगी। अखबारों में फोटो छपेंगी, रेडियो पर रिपोर्ट जाएगी! और पूरी दुनिया के लोग यह जान जाएँगे कि हम अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं। और ब्रिटिश सरकार के लिए यह बड़ी शर्म की बात होगी।"

"गांधी जी, बड़े ही अक्लमंद हैं, हैं न?" बिंदा ने हँसकर कहा, "हाँ, वह तो हैं ही।"

दोपहर को जब आश्रम में थोड़ी शांति छाई, धनी अपने पिता को ढूँढ़ने निकला। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर चरखा कात रहे थे।

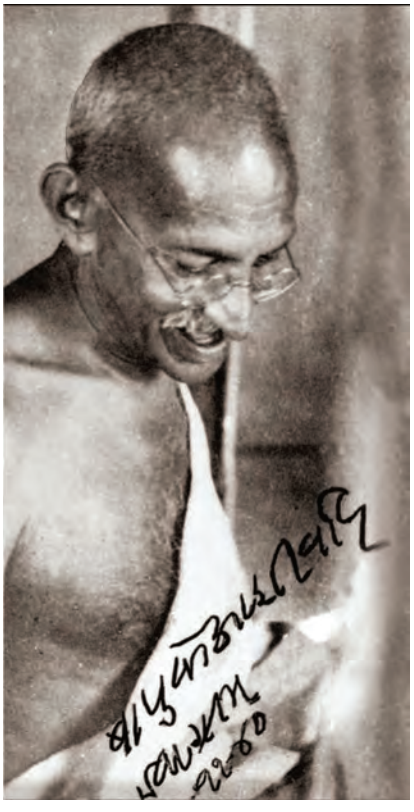

"पिता जी, क्या आप और अम्मा दांडी यात्रा पर जा रहे हैं ?" धनी ने सीधे काम की बात पूछी।

"मैं जा रहा हूँ। तुम और अम्मा यहीं रहोगे।"

"मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ।"

"बेकार की बात मत करो धनी तुम इतना लंबा नहीं चल पाओगे। आश्रम के नौजवान ही जा रहे हैं।"

धनी ने हठ पकड़ ली, "मैं नौ साल का हूँ और आपसे तेज़ दौड़ सकता हूँ।"

धनी के पिता ने चरखा रोक कर बड़े धीरज से समझाया, "सिर्फ वे लोग जाएँगे जिन्हें महात्मा जी ने खुद चुना है।"

"ठीक है! मैं उन्हीं से बात करूँगा। वह ज़रूर हाँ करेंगे!" धनी खड़े होकर बोला और वहाँ से चल दिया।

गांधी जी बड़े व्यस्त रहते थे। उन्हें अकेले पकड़ पाना आसान नहीं था। पर धनी को वह समय मालूम था जब उन्हें बात सुनने का समय होगा–रोज़ सुबह, वह आश्रम में पैदल घूमते थे।

अगले दिन जैसे ही सूरज निकला, धनी बिस्तर छोड़कर गांधी जी को ढूँढ़ने निकला। वे गौशाला में गायों को देख रहे थे। फिर वह सब्ज़ी के बगीचे में मटर और बंदगोभी देखते हुए बिंदा से बात करने लगे। धनी और बिन्नी लगातार उनके पीछे–पीछे चल रहे थे।

अंत में, गांधी जी अपनी झोंपड़ी की ओर चले। बरामदे में चरखे के पास बैठ कर उन्होंने धनी को पुकारा, "यहाँ आओ, बेटा!"

धनी दौड़कर उनके पास पहुँचा। बिन्नी भी साथ में कूदती हुई आई।

"तुम्हारा क्या नाम है, बेटा?"

"धनी, बापू।"

"और यह तुम्हारी बकरी है?"

"जी हाँ, यह मेरी दोस्त बिन्नी है, जिसका दूध आप रोज़ सुबह पीते हैं", धनी गर्व से मुस्कराया, "मैं इसकी देखभाल करता हूँ।"

"बहुत अच्छा" गांधी जी ने हाथ हिलाकर कहा,

"अब यह बताओ धनी कि तुम और बिन्नी सुबह से मेरे पीछे क्यों घूम रहे हो?"

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था", धनी थोड़ा घबराया। "क्या मैं आपके साथ दांडी चल सकता हूँ?" हिम्मत करके उसने कह डाला।

गांधी जी मुस्कुराए, "तुम अभी छोटे हो बेटा दांडी तो बहुत दूर है! सिर्फ़ तुम्हारे पिता जैसे नौजवान ही मेरे साथ चल पाएँगे।"

"पर आप तो नौजवान नहीं हैं", धनी बोला, "आप नहीं थक जाएँगे?"

"मैं बहुत अच्छे से चलता हूँ" गांधी जी ने कहा।

"मैं भी बहुत अच्छे से चलता हूँ, धनी भी अड़ गया। "हाँ, ठीक बात है", कुछ सोचकर गांधी जी बोले, "मगर एक समस्या है। अगर तुम मेरे साथ जाओगे तो बिन्नी को कौन देखेगा? इतना चलने के बाद, मैं तो कमज़ोर हो

जाऊँगा। इसलिए, जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

"हूँ... यह बात तो ठीक है, बिन्नी तभी खाती है, जब मैं उसे खिलाता हूँ", धनी ने प्यार से बिन्नी का सिर सहलाया, "और सिर्फ़ मैं जानता हूँ कि इसे क्या पसंद है।" "बिल्कुल सही। तो क्या तुम आश्रम में रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे ?" गांधी जी प्यार से बोले। "जी, हाँ, करूँगा", धनी बोला, "बिन्नी और मैं आपका इंतज़ार करेंगे।"

सुभद्रा सेन गुप्ता

अनुवाद–मनीषा चौधरी

1. इस कहानी को पढ़कर तुम्हें बापू के बारे में कई बातें पता चली होंगी। उनमें से कोई तीन बातें लिखें।

2. **कहानी के आधार पर**

धनी की माँ चूल्हा फूँक रही थीं।

धनी की माँ खाना पकाने के लिए चूल्हे का इस्तेमाल करती थीं।

(क) नीचे कुछ चित्र बने हैं। इनके नाम पता करो और लिखो।

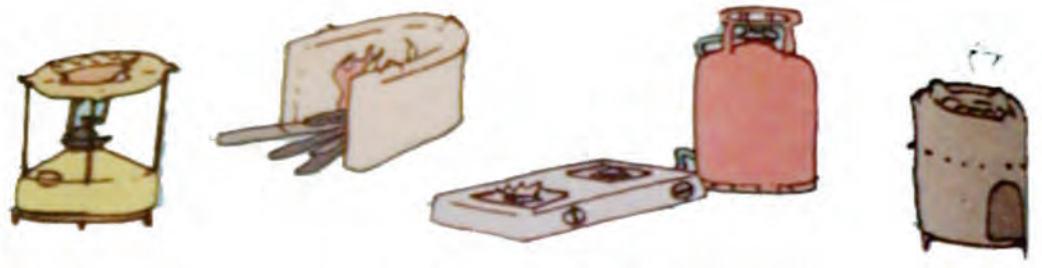

(ख) इनमें कौन-कौन से ईंधन का इस्तेमाल किया जाता है ?

(ग) तुम्हारे घर में खाना पकाने के लिए इनमें से किसका इस्तेमाल किया जाता है?

3. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरें।

व्यस्त, आश्रम, साबरमती, महात्मा गाँधी, दाँडी, नमक

(क) धनी को पता था कि ..... में कोई बड़ी योजना बन रही है।

(ख) धनी के माता-पिता अहमदाबाद के पास, ... के ..... आश्रम में रहते थे।

(ग) गाँधी जी पैदल चलते हुए ..... नाम की जगह पर समुद्र के पास पहुँचेगे।

(घ) भारतीय लोगों को ..... बनाने की मनाही है।

(ड) गाँधी जी बड़े ..... रहते थे।

4. कहानी से आगे

नीचे कहानी में आए कुछ शब्द लिखे हैं। कक्षा में चार-चार के समूह में एक-एक चीज़ के बारे में पता करो-

स्वतंत्रता सत्याग्रह

खादी चरखा

तुम इस काम में अपने दोस्तों से, बड़ों से, शब्दकोश या पुस्तकालय से सहायता ले सकते हो। जानकारी इकठ्ठा करने के बाद कक्षा में इसके बारे में बताओ।

5. आगे की कहानी

गांधी जी ने धनी से कहा, "क्या तुम आश्रम में ही रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?"

धनी ने गांधी जी की बात मान ली।

जब गांधी जी दांडी यात्रा से लौटे होंगे, तब आश्रम में क्या-क्या हुआ होगा ? आगे की कहानी सोचकर लिखो।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) धनी ने गांधी जी से सुबह के समय बात करना क्यों ठीक समझा होगा ?

(ख) धनी बिन्नी की देखभाल कैसे करता था ?

(ग) धनी को यह कैसे महसूस हुआ होगा कि आश्रम में कोई योजना बनाई जा रही है?

7. कहानी और तुम

(क) धनी यात्रा पर जाने के लिए उत्सुक क्यों था ?

– अगर तुम धनी की जगह होते तो क्या तुम यात्रा पर जाने की जिद करते ? क्यों ?

(ख) गांधी जी ने धनी को न जाने के लिए कैसे मनाया ?

– क्या तुम गांधी जी के तर्क से सहमत हो ? क्यों ?

8. ताकत के लिए

गांधी जी ने कहा, "जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

बताओ, खूब सारी ताकत और अच्छी सेहत के लिए तुम क्या-क्या खाओगे-पिओगे ?

चटपटी अंकुरित दाल	मीठा दूध
गर्म समोसे	रसीला आम
करारे गोलगप्पे	गर्मागर्म साग
कुरकुरी मकई की रोटी	ठंडी आइसक्रीम
खुशबूदार दाल	रंग-बिरंगी टॉफी
मसालेदार अचार	ठंडी शरबत

9. विशेषता के शब्द

अभी तुमने जिन खाने-पीने की चीज़ों के नाम पढ़े, उनकी विशेषता बता रहे हैं ये शब्द-

चटपटी, मीठा, गर्म, ठंडा, कुरकुरी आदि

नीचे लिखी चीज़ों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो–

..... हलवा ..... पेड़ ..... नमक ..... चींटी

..... पत्थर ..... कुर्ता ..... चश्मा ..... झंडा

चाँद की बिंदी नीचे लिखे शब्दों में सही जगह पर (ं) या (ँ) लगाओ।

धुआ कुआ फूक कहा स्वतत्र बाध मा

गाव बदगोभी इतज़ार पसद

10. किसकी ज़िम्मेदारी ?

धनी को बिन्नी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। इनकी क्या–क्या ज़िम्मेदारियाँ थीं ?

माँ

पिता

बिंदा

11. शब्दार्थ :–

कर	–	लगान, टैक्स
हठ	–	ज़िद, एक ही बात की रट लगाना।
व्यस्त	–	किसी की दिनचर्या में अधिक काम–काज
गौशाला	–	गायों, मवेशियों के लिए शैड

स्वतंत्रता की ओर

मनीषा चौधरी द्वारा अनूदित 'स्वतंत्रता की ओर' रचना सुभद्रा सेन गुप्त द्वारा रचित है। यह कहानी आजादी से पहले सन् 1930 के महत्वपूर्ण आंदोलन दाँडी यात्रा और अन्य पहलुओं से अवगत कराती है। पाठ में गाँधी जी के सिद्धांतो के विषय में भी बात की गई है। विद्यार्थी कहानी से यह शिक्षा भी ले सकते हैं कि हमें अपने कर्त्तव्य को ईमानदारी से निभाते हुए राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखना चाहिए।

D5G7Y6

13 पढ़क्कू की सूझ

एक पढ़क्कू बड़े तेज़ थे, तर्कशास्त्र पढ़ते थे,
जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे।

एक रोज़ वे पड़े फिक्र में समझ नहीं कुछ पाए,
"बैल घूमता है कोल्हू में कैसे बिना चलाए?"

कई दिनों तक रहे सोचते, मालिक बड़ा गज़ब है ?
सिखा बैल को रक्खा इसने, निश्चय कोई ढब है।

आखिर, एक रोज़ मालिक से पूछा उसने ऐसे,
"अजी, बिना देखे, लेते तुम जान भेद यह कैसे ?

कोल्हू का यह बैल तुम्हारा चलता या अड़ता है ?
रहता है घूमता, खड़ा हो या पागुर करता है?"

मालिक ने यह कहा, "अजी, इसमें क्या बात बड़ी है ?
नहीं देखते क्या, गर्दन में घंटी एक पड़ी है ?

जब तक यह बजती रहती है, मैं न फ़िक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ।"

कहा पढ़क्कू ने सुनकर, "तुम रहे सदा के कोरे!
बेवकूफ! मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़े!

अगर किसी दिन बैल तुम्हारा सोच-समझ अड़ जाए,
चले नहीं, बस, खड़ा-खड़ा गर्दन को खूब हिलाए।

घंटी टुन-टुन खूब बजेगी, तुम न पास आओगे,
मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे ?

मालिक थोड़ा हँसा और बोला कि पढ़क्कू जाओ,
सीखा है यह ज्ञान जहाँ पर, वहीं इसे फैलाओ।

यहाँ सभी कुछ ठीक-ठाक है, यह केवल माया है,
बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है।

-रामधारी सिंह दिनकर

1. पढ़क्कू

(क) पढ़क्कू का नाम पढ़क्कू क्यों पड़ा होगा ?

(ख) तुम कौन-सा काम खूब मन से करना चाहते हो ? उसके आधार पर अपने लिए भी पढ़क्कू जैसा कोई शब्द सोचो।

2. कविता में कहानी

'पढ़क्कू की सूझ' कविता में एक कहानी कही गई है। इस कहानी को तुम अपने शब्दों में लिखो।

3. कवि की कविताएँ

अपने साथियों के साथ मिलकर इस तरह की अन्य कविताएँ ढूँढ़ें। कविताएँ इकट्ठे करके कविता की एक पुस्तक बनाओ।

4. मेहनत के मुहावरे

कोल्हू का बैल ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो कड़ी मेहनत करता है या जिससे कड़ी मेहनत करवाई जाती है।

मेहनत और कोशिश से जुड़े कुछ और मुहावरे नीचे लिखे हैं। इनका वाक्यों में इस्तेमाल करो।

- दिन-रात एक करना
- पसीना बहाना
- एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना

5. अपना तरीका

'हाँ जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ'

6. पूँछ धरता हूँ का मतलब है पूँछ पकड़ लेता हूँ।

नीचे लिखे वाक्यों को अपने शब्दों में लिखो।

(क) मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे ?

(ख) बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है।

(ग) सिखा बैल को रखा इसने निश्चय कोई ढब है।

(घ) जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे।

7. गढ़ना

पढ़क्कू नई-नई बातें गढ़ते थे।

बताओ, ये लोग क्या गढ़ते हैं ?

सुनार ..... कवि .....

लुहार ..... कुम्हार .....

ठठेरा ..... लेखक .....

8. अर्थ खोजें

नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ अक्षरजाल में खोजें –

ढब, भेद, गज़ब, मंतिख, छल				
त	र्क	शा	स्त्र	म्र
रा	ज	त	क	ब
जू	स	री	मा	धो
रा	ज़	का	ल	खा
धो	क	म	ल	ड

9. शब्दार्थ :–

तर्कशास्त्र – मंतिख

गढ़ना – तैयार करना

ढब – तरीका

भेद – राज़

पागुर – जुगाली

फिक्र – चिंता

तनिक – थोड़ा

धरता – पकड़ता (कविता के आधार पर)

कोरे	–	जिसे पूरी समझ न हो, नासमझ
अड़ जाना	–	जिद्द करना, हठ करना
सांझ	–	शाम, संध्या
मंतिख	–	तर्क या विवेचना करने के नियम, तर्कशास्त्र

पढ़क्कू की सूझ

रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित "पढ़क्कू की सूझ" कविता तार्किक सोच और व्यावहारिक ज्ञान में से व्यावहारिक ज्ञान की श्रेष्ठता सिद्ध करती है। प्रस्तुत कविता में ज्ञान और शिक्षा के प्रति उत्साही दृष्टिकोण रखने वाला पढ़क्कू साधारण ज्ञान रखने वाले बैल के मालिक के हाथों उपहास का पात्र बन जाता है। कविता विद्यार्थियों को न केवल हँसाती है बल्कि उन्हें व्यावहारिकता का महत्व भी समझाती है।

14 बूझो तो जाने

फूल	मिठाई	प्यास	कमाल	रानी
जानवर	हिरन	जानवर	दुम	सीना

(1) हाथ थामों वह खूब भगाएगी,
भागते-भागते अक्ल जगाएगी।

(2) ऐसा लिखिए शब्द बनाए,
फूल, फल, मिठाई बन जाए।

(3) दिन को सोए, रात को रोए,
जितना रोए, उतना खोए।

(4) कभी हँसाता कभी वह रुलाता है,
दिन को गुज़रता रात को छिप जाता है।

(5) एक थाल मोती से भरा, सबके सर पर औंधा धरा,
धीरे-धीरे थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।

(6) एक राजा की अनोखी रानी,
दुम के रस्ते पीती पानी !

(7) ऊँट की बैठक, हिरन की चाल,
अजीब है वह जानवर, दुम है न बाल!

(8) एक फल ऊपर से हरा, अंदर से सीना लाल,
रस से भरा हुआ है सारा खाने से लगता प्यारा!

(9) हरी थी, मन भरी थी, लाला जी के बाग़ में
दुशाला औढ़े खड़ी थी!

(10) नन्हे मुन्ने दुर्गा दास,
कपड़े पहने सौ-पचास!

– संदीप कुमार

उत्तर

(1) पेंसिल	(2) गुलाब जामुन	(3) मोमबत्ती
(4) समय/वक्त	(5) आकाश	(6) जीभ
(7) मुर्गा	(8) अंगूर	(9) मकई
(10) प्याज़		

2. श्रुतलेख :-

1. मिलकर	2. हँसाता	3. औंधा	4. अनोखी
5. ऊँट	6. दुम	7. दुशाला	8. ओढ़े
9. नन्हे	10. मुन्ने	11. दुर्गा	12. सौ

P7A8M2

15 मेरे प्यारे शिष्य

शिष्य	ललक	साधना	परमेश्वर	दुनिया
जीवन	आशीष	शील	प्रसिद्धि	अस्तित्व

शिक्षा की लौ तुम में जलती रहे,
हर पल कुछ नया करने की ललक तुम में पलती रहे।

ज्ञान की साधना हर पल चलती रहे,
माता-पिता एवं परमेश्वर की आराधना चलती रहे।

तुम्हारे नेतृत्व में धरा की कठिनाईयाँ मिटती रहें,
तुम्हारे तेज से दुनिया चमकती रहे।

तुम्हारे हाथों नि:स्वार्थ सेवा चलती रहे,
तुम्हारे जीवन की हर बूँद परमार्थ में लगती रहे।

जहाँ भी तुम जाओगे हर पल मुझे साथ पाओगे,
मेरे स्नेह के आशीष से कड़ी धूप में भी छाँव पाओगे,
जीवन में शील समाधि और प्रज्ञा का प्रवाह पाओगे।

आशा है, जग में जहाँ भी जाऊँगा तुम्हारी प्रसिद्धि की चर्चा पाउँगा,
तुम्हारे अस्तित्व में अपने अस्तित्व की लौ को जलता हुआ पाउँगा।

– अजय कुमार सिंह

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

क) 'मेरे प्यारे शिष्य' कविता में कवि क्या कामना कर रहा है ?

ख) कविता में किनकी अराधना करने की बात कही गई है ?

ग) "मेरे स्नेह के आशीष से कड़ी धूप में भी छाँव पाओगे" पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट करें ?

घ) कवि प्रत्येक स्थान पर किसकी चर्चा सुनना चाहता है और क्यों ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा करें :-

(क) शिक्षा की लौ तुम में जलती रहे

.....

(ख) तुम्हारे नेतृत्व में धरा की कठिनाईयाँ मिटती रहें।

.....

तुम्हारे हाथों में निस्वार्थ सेवा चलती रहे।

(ग) जहाँ भी तुम जाओगे हर पल मुझे साथ पाओगे

.....

जीवन में शील समाधि और प्रज्ञा का प्रवाह पाओगे।

3. पढ़ें, समझें और लिखें :-

माता-पिता - माता और पिता

सुख-दुख - सुख और दुख

दिन–रात – .....

बेटा–बेटी – .....

पाप–पुण्य – .....

सीता–राम – .....

खरा–खोटा – .....

4. शिक्षक की सहायता से गुरु शिष्य परंपरा पर आधारित दोहों को कंठस्थ कीजिए।

5. कविता में आए निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करें।

शब्द	अर्थ	वाक्य
ललक	.....	.....
धरा	.....	.....
परमार्थ	.....	.....
स्नेह	.....	.....
आशीष	.....	.....
प्रज्ञा	.....	.....
अस्तित्व	.....	.....
लौ	.....	.....

6. श्रुतलेख :-

शिक्षा	लौ	ललक	ज्ञान	साधना
परमेश्वर	अराधना	नेतृत्व	धरा	नि:स्वार्थ
परमार्थ	आशीष	समाधि	प्रज्ञा	प्रवाह
प्रसिद्धि	चर्चा	अस्तित्व		

7. शब्दार्थ :-

लौ	–	प्रकाश
ललक	–	इच्छा
साधना	–	तपस्या
अराधना	–	पूजा
कठिनाईयाँ	–	मुश्किलें
धरा	–	धरती
नि:स्वार्थ	–	बिना स्वार्थ के
परमार्थ	–	परोपकार, भलाई
स्नेह	–	प्रेम
आशीष	–	आशीर्वाद
प्रज्ञा	–	बुद्धि, ज्ञान

शील – सदाचरण

प्रसिद्धि – मशहूरी

अस्तित्व – वजूद

मेरे प्यारे शिष्य

अजय कुमार सिंह द्वारा रचित इस कविता में एक शिक्षक अपने विद्यार्थी में अनेक गुणों को पुष्पित पल्लवित करने की कामना करता है। उसकी आकांक्षा है कि उसका विद्यार्थी उसका ही प्रतिबिंब बने। कवि कामना करता है कि उसके विद्यार्थी के नेतृत्व में न केवल समाज की कठिनाइयाँ दूर हों अपितु वह निःस्वार्थ भाव से कर्त्तव्य पथ पर डटा रहे।

NOTES

NOTES

जम्मू - कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड